महारथी लाला लाजपतराय

विश्वम्भर प्रसाद शर्मा

महारथी लाला लाजपतराय ।

(सचित्र संपूर्ण जीवनचरित्र)

लेखक

विश्वम्भरप्रसाद शर्मा विशारद

संपादक—माहेश्वरी

माहेश्वरी कार्यालय बंबई नं० २

प्रथम संस्करण २००० } मार्गशीर्ष संवत १९८५ वि. { मूल्य आठ आ

मुद्रक —
भास्कर महादेव सिन्द्ये,
मुबईवैभव प्रेस, सॅंढर्स्टरोड,
गिरगाव-मुंबई.

प्रकाशक —
विश्वम्भरप्रसाद शर्मा
विशारद, सपादक-माहेश्वरी
घवई नं. २

समर्पण।

स्वतंत्रता की वेदी पर बलिदान होने वाले नर केशरी
लाला लाजपतराय की यह संक्षिप्त जीवनी भारतीय
नवयुवकों के कर कमलों में सादर समर्पित है।
आशा है भारतमाता के आशास्तंभ इस पवित्र
भारतभूमि के वीर नवयुवक अपने स्वर्गीय
पथ प्रदर्शक नरकेशरी लाला लाज-
पतराय के पदचिन्हों पर चल
कर स्वदेश की स्वतंत्रता के
लिये इसी प्रकार
मर मिटेंगे।

विश्वम्भरप्रसाद शर्मा।

जुल्म के डंडों का मारा चल बसा !

जुल्म है लाला हमारा चल बसा,
हिन्दकी आंखों का तारा चल बसा !
कांग्रेसको जिसने सींचा खून से,
देश के वह गमका मारा चल बसा !!

खूनके आंसू बहालो हिन्दुओ,
रहनुमा था जो तुम्हारा चल बसा !
आन रखी क़ौमकी पर जानदी,
जुल्मके डंडों का मारा चल बसा !!

यह तमन्ना थी कि मुल्क आज़ाद हो,
सल्तनत की जड़का मारा चल बसा !
शर्म नौकरशाही कुछ तो शर्म कर,
हाय गेरे नर हमारा चल बसा !!

---

* लालजी की अर्थी का जुलूस जब श्मशान की ओर जारहा था उस समय दुखी जनता यही गीत गारही थी।

महारथी की अंतिम गर्जना।

नवयुवकों को अंतिम संदेश

विगत ता. ३० अक्तूबर १९२८ को सायमन कमीशन के आगमन पर लाहौर में लालाजी तथा अन्य नेताओं पर पुलिस ने जो लट्टि प्रहार किया था, उस विषयमें उसी दिन लाहौर में पुलिस की इस अनुचित कार्य–वाही की निन्दा करने के लिए जो सार्वजनिक विराट सभा हुई थी उसके सभापति "शहीदे वतन" लालाजी ही थे। उस सभा में जो आपने व्याख्यान दिया वही आपका अंतिम भाषण था। भाषण क्या था हमारे आहत सेनापति की अन्तरात्मा से निकली हुई दिव्य-वाणी थी–भारतके नवयुवकों के लिए एक पवित्र संदेश था। हम उस दिव्यवाणी को यहां उद्धृत करते है और आशा करते है कि भारतके वीर नवयुवक अपने स्वर्गीय नेता के इस दिव्य संदेश को स्मरणही न रखेंगे वरन उसे कार्यरूप में परिणित करके उस दिवंगत महानात्मा का शुभाशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

"मैं इस मंच पर खड़ा होकर यह घोषणा करता हू कि *आज हम पर जो वार हुआ है, वह अंग्रेजी साम्राज्यका अंत* निकट आजाने की सूचना देता है। जिस किसीने पुलिस के इस क्रूर कर्म को देखा है। ग्र उसे कभी नहीं भूल सकता।

वह दृश्य, हमें बुरी तरह अन्तर्हित हो गया है। हमें इस कायरतापूर्ण आक्रमण का बदला चुकाना है। बदला चुकानेसे मेरा मतलब खून खराबी करना नहीं बल्कि स्वाधीनता प्राप्त करना है। मै सरकार को चेतावनी देना चाहता हूं कि अगर इस देश में 'रक्तरंजित क्रांति होगई तो उसकी जिम्मेदारी आज कासा दुष्कर्म करनेवाले गोरे अफसरों परही होगी। हमारा ध्येय 'तो यही है कि हम स्वराज्य का युद्ध शांतिपूर्ण एवं अहिंसात्मक ढंगसे ही लड़ें लेकिन अगर सरकार और सरकारी अफसरों के यही ढंग रहे और इसके जबाब में हमारे नौजवानों ने, हमारे कहने की पर्वा न करके यह निश्चय कर लिया कि अपने मुल्क की आजादी हासिल करने के लिए जो कुछ भी करना पड़े वह सब ठीक है तो उसमें कोई आश्चर्य की बात न होगी। मैं नहीं जानता कि मै उस दिनको देखने के लिए जीता रहूंगा या जब तक मर जाऊंगा लेकिन चाहे मै जीता रहूं या मर जाऊं, और मेरे देश के नौजवानों को लाचार होकर उस दिन का सामना करनाही पड़ा, तो मेरी आत्मा उन्हें में युद्ध विजय प्राप्त करने के लिये आशीर्वाद देगी।"

प्रस्तावना

गुणिगण गणनारम्भे न पतति कठिनी सुसंभ्रमा ....
तेनाम्बा यदि सुतिनी वद वन्ध्या कीदृशी नाम ॥

कविने कैसे सुन्दर वचन कहे है। गुणी जनों की गणना में जिस मनुष्य की कोई गिनती नहीं होती, ऐसे मनुष्यों की माता को यदि पुत्रवती कहा जाय तो वंध्या किसे कहेंगे ? पुत्रविहीन माता को सर्वसाधारण वध्या नाम से पुकारते है लेकिन कवि कहता है कि वे स्त्रियां भी वंध्याही है जिनके पुत्र संसार में गुणियों की गणना में नहीं आते । वस्तुतः ससार में असंख्य मनुष्य जन्म ग्रहण करते है और मर जाते है—उन्हें कोई जानता भी नहीं । लेकिन महापुरुषों की बातही कुछ विलक्षण ह । उनका नाम अमर होता है और उनकी कीर्ति अमिट होती है । वे जब तक जीवित रहते है, अहिर्निश परोपकार में रत रहते है और मरने पर भी अपना समुज्वल एवं आदर्श जीवन चरित्र दूसरों के लिये छोड जाते है ।

इस वीर वसुंधरा भारत भूमि पर परमेश्वर की सदैव कृपा रही है । जब जब संकट का समय उपस्थित हुआ है कोई न कोई महापुरुष भारत में अवतरित होताही है । भारत का प्राचीन और अर्वाचिन इतिहास इस प्रकार के महापुरुषों की जाज्वल्यमान जीवन ज्योति से आलोकित हो रहा है । इस छोटीसी पुस्तिका में आज हम ऐसेही एक महापुरुष का वर्णन करने बैठे हैं । वह महापुरुष और कोई नहीं पंजाब केशरी लाला लाजपतराय है ।

शायदही कोई भारतीय ऐसा हो जो स्वनाम धन्य लाला लाजपतरायजी के शुभ नाम से परिचित न हो। देश का बच्चा २ उस नरकेशरीको जानता है और उस महापुरुष की बहुमूल्य सेवाओं को स्मरण कर प्रसन्नता से नाच उठता है। लाला लाजपतराय जगराव जिला लुधियाना पंजाब के अग्रवाल वंशीय थे। २८ जनवरी सन १८६५ ई० को पंजाब के ढुंडिग्राम में आपने जन्म लिया था और लगभग ६३ वर्ष स्वदेश, स्वधर्म और मानव समाज की अमूल्य सेवा कर विगत १७ नवंबर १९२८ ई० को प्रातःकाल ७॥ बजे आप भारतवासियों को रोता बिलखता छोड गये। इन ६३ वर्षों में बाल्यावस्था के और विद्यार्थी अवस्था के २३ वर्षों को छोड कर शेष ४० वर्षों में लालाजी ने स्वदेश और स्वधर्म की सेवा में न केवल अपना तन और मनही दिया वरन अपनी गाढी कमाई भी उसीके अर्पण करदी। लालाजी अपनी दानवीरता के लिए प्रसिद्ध थे। स्व० महात्मा गोखले के साथ जब आप इंगलेंड में भारतवर्ष की वास्तविक स्थिति और आवश्यकता का प्रचार करने के लिए गये तो आपने सफर खर्च के लिए जनता से एक पैसा नहीं लिया और स्वयं सारा खर्च उठाया। यही नहीं डी. ए. वी. कालिज तिलक स्कूल ऑफ पालिटिक्स, फीरोजपुर अनाथालय, स्वस्थापित सर्वेण्ट ऑफ दी पीपुल सोसाइटी तथा राष्ट्रीय, सामाजिक और धार्मिक आदोलनों में आपने लाखों रुपये की सहायता की। सचमुच आप प्रकृत कार्यकर्ता और महान नेता थे। आपका राजनैतिक ज्ञान महान गंभीर था। अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के आप विशेषज्ञ थे। भारत के किसी नेता को अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थित का इतना दीर्घ ज्ञान नहीं है। महात्मा गाधी आपके अंतर्राष्ट्रीय ज्ञान को देखकर आपको भारतका वैदेशिक मंत्री (Foreign minister) कहते थे। लालाजी के किस २ गुण और किस २ विशेषता पर लिखें। वे विशेषताओं और गुणों के भंडार थे। यह भारतदेश का बड़ा भारी दुर्भाग्य है कि लालाजी सरीखा एक महान सेनापति असमय में चल बसा। इस समय आपकी समुपस्थितिकी भारी आवश्यकता थी।

जिस जमाने में भारतवासी स्वराज्य शब्द का उच्चारण भी नहीं जानते थे और किसी प्रकार का राजनैतिक ज्ञान नही रखते थे उस समय लालाजी स्वदेश की स्वतंत्रता के लिए घोर प्रयत्न कर रहे थे। स्वदेशभक्ति के लिए ही आपको सन १९०७ में सरकारने मांडले की जेलमें निर्वासित कर दिया। Law and order के नामपर उछलकूद मचानेवाली गोरी नोकरशाही का बिना किसी प्रमाण के आधारपर आपके साथ इस प्रकार का क्रूर व्यवहार करना घोर अन्याय था लेकिन संसारमें अपने को सुसभ्य विघोषित करनेवाली सरकार इस अन्यायपूर्ण काय-वाही से यत्किंचित भी विचलित नहीं हुई। हमारे नरकेशरी सरकार की इस दमन नीतिसे विचलित होनेवाले नहीं थे। वे मांडले की जेल में अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए नाना प्रकार के जेलसंबंधी अमानुषिक कष्ट सहन करते रहे। १८ महीने बाद आपको छोड़ दिया गया। आपने मांडले से आकर अपना कार्य बंद नहीं किया वरन द्विगुणित उत्साह के साथ स्वदेशोन्नति के लिए प्रयत्न करते रहे। आय सामाजिक आन्दोलन के तो उस समय आप जीवन थे। आर्य समाज की आपने पंजाब में जो अमूल्य सेवा की उसे आर्य समाज कभी नहीं भुला सकता। आर्य समाजने आप जैसे कर्मवीर, कष्टसहिष्णु और स्वदेशरक्षा के लिए सर्वस्वत्याग करनेवाले नररत्न को उत्पन्न कर संसार में अपन को धन्य बना लिया है। राजनैतिक विचारों में आर्य समाजसे मतभेद रखते हुए भी लालाजी सदैव आय समाज को अपनी माता और महर्षि दयानन्द को अपना गुरु मानते रहे। जन्मभर आर्य समाजकेही मंतव्योंका प्रचार किया।

आजसे ५०।५५ वष पूव का इतिहास इस बातका साक्षी है कि महर्षि दयानन्द के आर्य समाज संबंधी आन्दोलनने हीं पंजाबही नहीं समग्र भारतवर्ष में नवजीवन फूंका था। स्वराज्य, स्वदेशभक्ति, गोरक्षा और अछूतोद्धार का शंखनाद सबसे पूर्व महर्षि दयानन्दजीनेही किया था। पंजाब में महर्षि दयानन्द के आन्दोलन ने व्यापक रूप प्राप्त

शायदही कोई भारतीय ऐसा हो जो स्वनाम धन्य लाला लाजपतरायजी के शुभ नाम से परिचित न हो। देश का बच्चा २ उस नरकेशरीको जानता है और उस महापुरुष की बहुमूल्य सेवाओं को स्मरण कर प्रसन्नता से नाच उठता है। लाला लाजपतराय जगराव जिला लुधियाना पंजाब के अग्रवाल वंशीय थे। २८ जनवरी सन १८६५ ई० को पंजाब के ढेंडिग्राम में आपने जन्म लिया था और लगभग ६३ वर्ष स्वदेश, स्वधर्म और मानव समाज की अमूल्य सेवा कर विगत १७ नवंबर १९२८ ई० को प्रातःकाल ७॥ बजे आप भारतवासियों को रोता बिलखता छोड गये। इन ६३ वर्षों में बाल्यावस्था के और विद्यार्थी अवस्था के २३ वर्षों को छोड कर शेष ४० वर्षो में लालाजी ने स्वदेश और स्वधर्म की सेवा में न केवल अपना तन और मनही दिया वरन अपनी गाढी कमाई भी उसीके अर्पण करदी। लालाजी अपनी दानवीरता के लिए प्रसिद्ध थे। स्व० महात्मा गोखले के साथ जब आप इंगलेंड में भारतवर्ष की वास्तविक स्थिति और आवश्यकता का प्रचार करने के लिए गये तो आपने सफर खर्च के लिए जनता से एक पैसा नहीं लिया और स्वयं सारा खर्च उठाया। यही नहीं डी. ए. वी. कालिज, तिलक स्कूल ऑफ पालिटिक्स, फीरोजपुर अनाथालय, स्वस्थापित सर्वेण्ट ऑफ दी पीपुल सोसाइटी तथा राष्ट्रीय, सामाजिक और धार्मिक आंदोलनों में आपने लाखों रुपये की सहायता की। सचमुच आप प्रकृत कार्यकर्ता और महान नेता थे। आपका राजनैतिक ज्ञान महान गंभीर था। अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के आप विशेषज्ञ थे। भारत के किसी नेता को अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थित का इतना दीर्घ ज्ञान नहीं है। महात्मा गांधी आपके अंतर्राष्ट्रीय ज्ञान को देखकर आपको भारतका वैदेशिक मंत्री (Foreign minister) कहते थे। लालाजी के किस २ गुण और किस २ विशेषता पर लिखें। वे विशेषताओं और गुणों के भंडार थे। यह भारतदेश का बड़ा भारी दुर्भाग्य है कि लालाजी सरीखा एक महान सेनापति असमय में चल बसा। इस समय आपकी समुपस्थितिकी भारी आवश्यकता थी।

जिस जमाने में भारतवासी स्वराज्य शब्द का उच्चारण भी नहीं जानते थे और किसी प्रकार का राजनैतिक ज्ञान नहीं रखते थे उस समय लालाजी स्वदेश की स्वतंत्रता के लिए घोर प्रयत्न कर रहे थे । स्वदेशभक्ति के लिए ही आपको सन १९०७ में सरकारने मांडले की जेलमें निर्वासित कर दिया। Law and order के नामपर उछलकूद मचानेवाली गोरी नौकरशाही का बिना किसी प्रमाण के आधारपर आपके साथ इस प्रकार का क्रूर व्यवहार करना घोर अन्याय था लेकिन संसारमें अपने को सुसभ्य विघोषित करनेवाली सरकार इस अन्यायपूर्ण काय-वाही से यत्किंचित भी विचलित नहीं हुई । हमारे नरकेशरी सरकार की इस दमन नीतिसे विचलित होनेवाले नहीं थे । वे मांडले की जेल में अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए नाना प्रकार के जेलसंबंधी अमानुषिक कष्ट सहन करते रहे । १८ महीने बाद आपको छोड़ दिया गया । आपने मांडले से आकर अपना कार्य बंद नहीं किया वरन द्विगुणित उत्साह के साथ स्वदेशोन्नति के लिए प्रयत्न करते रहे । आय सामाजिक आन्दोलन के तो उस समय आप जीवन थे। आर्य समाज की आपने पंजाब में जो अमूल्य सेवा की उसे आर्य समाज कभी नहीं भुला सकता । आर्य समाजने आप जैसे कर्मवीर, कष्टसहिष्णु और स्वदेशरक्षा के लिए सर्वस्वत्याग करनेवाले नररत्न को उत्पन्न कर संसार में अपन को धन्य बना लिया है । राजनैतिक विचारों में आर्य समाजसे मतभेद रखते हुए भी लालाजी सदैव आय समाज को अपनी माता और महर्षि दयानन्द को अपना गुरु मानते रहे । जन्मभर आर्य समाजकेही मंतव्योंका प्रचार किया।

आजसे ५०।५५ वष पूव का इतिहास इस बातका साक्षी है कि महर्षि दयानन्द के आर्य समाज संबंधी आन्दोलनने हीं पंजाबही नहीं समग्र भारतवर्ष में नवजीवन फूंका था । स्वराज्य, स्वदेशभक्ति, गोरक्षा और अछूतोद्धार का शंखनाद सबसे पूर्व महर्षि दयानन्दजीनेही किया था । पंजाब में महर्षि दयानन्द के आन्दोलन ने व्यापक रूप प्राप्त

क्रिया और तत्परिणाम स्वरूप पंजाबके नवयुवकों में भारी जागृति हुई। उसका यह फल हुआ कि पंजाब राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक आन्दोलनों का घर ही बन गया। स्वर्गीय मुनिवर गुरुदत्तजी M. A. परलोकगत शहीद स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज, भाई परमानन्द, हमारे चरित्रनायक स्वनामधन्य लाला लाजपतराय, सर्वस्वत्यागी लाला हरदयालुजी और महात्मा हंसराज आदि अनेक वीर देशभक्त पंजाब में उत्पन्न हुए और मातृभूमिकी सेवाके लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया।

पंजाबकी क्रूर नौकरशाही और अनार्किस्टों के हौवे से भयत्रस्त भारत सरकारने लालाजीको एक बार निर्दोष समझ कर छोड़ देने पर भी उनका पीछा न छोड़ा। उनकी हर एक प्रगति की चौकसी रखी जाने लगी। इस प्रकार समय २ पर तंग किये जाने पर भी लालाजी विचलित नहीं हुए और बराबर देश सेवाके कार्य में लगे रहे। भारतकी शिक्षा पद्धति के लालाजी प्रारंभ से ही विरोधी थे। इसी सदुद्देश्यकी पूर्ती के लिए उन्होंने डी. ए. वी. कालिज लाहोर की स्थापना में पूर्ण सहयोग दिया। यही नहीं अपनी शक्ति लगाकर अन्य कई स्थानों में लालाजीने अछूतों तथा निर्धनों के लिए पाठशालाएं स्थापित कराई। जापानकी शिक्षा प्रणाली का अध्ययन करनेकी इच्छा से लालाजी जापान गये। वहां से वे लौटनाही चाहते थे कि यूरोपीय महायुद्ध छिड गया। भारत सरकार लालाजी को खतरनाक तो समझती ही थी और इस अवसर पर विशेष संशंक बनकर लालाजी को इंगलेंड तथा भारत में आने से रोक दिया। पराधीन देशवासियों के साथ यही अत्याचार होते है। सन १९१४ में लालाजी जापान से अमरीका चले गय और वहां से ही अपनी मातृभूमि की सेवा करते रहे।

सन १९२० में लालाजी को भारत लौटनेकी आज्ञा मिल गई। भारत लौटने पर देशवासियों ने आपका धूमधाम से स्वागत किया। लालाजी के आगमन से पूर्व नरपिशाच डायरके लोमहर्षण हत्याकांड से सारा भारतवर्ष

दुखी था। लालाजी के हृदय को इस नर हत्याकांड से बडी चोट पहुंची। आपने जलियानवाले बागके इस हत्याकांड की स्वतंत्र और खुली जांच की आवश्यकता देशके समक्ष रखी। इधर खिलाफत का मसला सामने था। उधर सत्याग्रहका जोर था। इन सब परिस्थितियों को देखकर और एक मतसे सब कार्य करनेकी सदिच्छा से कलकत्ते में राष्ट्रिय महासभा (Congress) का अधिवेशन करने का निश्चय किया गया। सारे देशने एक स्वर से लालाजी को अपने इस पवित्र राष्ट्रीय यज्ञ का अधिष्ठाता बनाया। लालाजीने बडी सुयोग्यता के साथ देशका नेतृत्व ग्रहण किया। आपने महात्मा गांधी के असहयोग सिद्धान्तका समर्थन किया। महासभाने भी असहयोग की नीति को स्वीकार कर लिया और देशमें एक सिरे से दूसरे सिरे तक स्वतंत्रता की लहर बह निकली। वर्षों से सोया हुआ गुलामी मे जकडा हुआ देश हड़बडा कर जाग उठा। आबाल वृद्ध स्वराज्य प्राप्ति के लिए सचेष्ट हो गये। चहुं ओर सत्याग्रह की धूम मच गई। अहा, कैसे सौभाग्य का समय था—देशमें कैसा नवजीवन था। भारत-वासियों में कैसी उमंगथी थीं—नौकरशाहीकी नकमें दम आगया था। सरकारी जेलें सत्याग्रहियों से भर गई। हमारे चरित्र नायक स्वनाम धन्य लालाजी भी न बचे। उन्हें एक बार फिर जेलयात्रा करनी पडी। धन्य है वीरवर आपने प्यारे स्वदेश के लिए कितने कष्ट उठाये निर्वासित हुए, जलावतन किये गये और कठोर कारावास में बंद किये गये मगर स्वदेश भक्ति से मुंह न मोडा।

बंद होता था जहां ये शेरे नर पंजाबका।
आबू जाती थी बढ उस जेलकी दीवार की॥

सचमुच आप जिस जेलमें कैद किये जाते थे उस जेल की प्रतिष्ठा बढ जाती थी। सत्याग्रह आन्दोलन में आपको १½ वर्ष की सजा हुई छूटने पर फिर आपने अपना वही क्रम जारी रखा। राष्ट्रीय क्षेत्रमें तो कार्य करते ही थे लेकिन हिन्दू मुस्लिम विद्रोह की आग भड़कती देख तथा हिन्दू

समाज की असंगठित दशा समझकर आपने हिन्दू समाज के संगठन की ओर दृष्टि डाली। महामना मालवीय जी के सहयोगसे तथा परलोकगत शहीद स्वामी श्रद्धानंदजी महाराज की सहायता से आपने हिन्दू महासभा का संगठन किया, शुद्धि और अछूतोद्धार की दुंदुभि बजायी। राष्ट्रीयता की रक्षाके लिए ही आपने हिन्दू संगठन, शुद्धि और अछूतोद्धार को अपनाया था। लोग आपको पिछले दिनों केवल सांप्रदायिता में ही रंग हुआ समझते थे मगर यह उनकी भूल थी जो उन्होंने स्वीकार की। हिन्दू संगठनके नेता होतेहुवे भी मुसलमानों के प्रति किसी प्रकार की दुर्भावना लालाजी के हृदय में न उठी। वे हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के कट्टर पक्षपाती थे और जब कभी हिंदू मुसलमानों के समझोते की चर्चा हुई, लालाजी ने सदैव आगे बढ़कर उसका स्वागत किया। हिन्दू महासभा के अध्यक्ष होते हुए भी आप कभी राष्ट्रीयता के विरोधी नहीं हुए और यह आपहीका पुण्य प्रताप है कि हिन्दू महासभा सदैव राष्ट्रहित समर्थिका बनी रही।

आप हिन्दुओंका संगठन स्वदेशोद्धारके लिए करना चाहते थे—स्वदेश विद्रोह अथवा हिन्दू मुस्लिम विद्वेष वृद्धि के लिए नहीं। ऐसा कौनसा आन्दोलन था जिसमें लाला लाजपतरायने प्रमुख भाग न लिया हो। राजनैतिक सामाजिक-धार्मिक शिक्षा और व्यापारिक सबही आन्दोलनों में लालाजीने विपुल कार्य किया। सन १८९७में जब पंजाब में भीषण दुर्भिक्ष पडा तो लालाजीका विशाल हृदय आर्द्र हो गया। वे साथियों सहित वहां भागे गये और हजारों बुभुक्षित प्राणियों की रक्षाकी—अनाथों को अपने आश्रय से सनाथ बनाया। सामाजिक क्षेत्र में लालाजीने जो कार्य किया उसे भारतीय समाज सुधारक भली प्रकार जानते हैं। जिन क्रूर सामाजिक कुरीतियों के कारण हिन्दू समाज आज *क्षत विक्षत दिखाई देता है लालाजीने उनके विरोध में तीव्र आंदोलन* किया। हिन्दू समाज की ही नहीं वरन देशकी भलाई के लिए वे जाति-पांतिके ढकोसलोंका नाश चाहते थे और उसका विरोध करते थे। पंजाबी

समाजमें जो सामाजिक जागृति दृष्टिगोचर होती है उसका कारण लालाजी की सामाजिक क्रांति का ही शुभ परिणाम है। धर्म के नाम पर हिन्दू समाज में जो विनाशकी अग्नि धधक रही है लालाजी उसे सदैव शांत करने के लिए प्रयत्न करते थे। नाशकारी धार्मिक विश्वासों के विरोधमें लालाजी की सबसे पहले आवाज निकलती थी। शिक्षा क्षेत्रमें लालाजी को यदि देश के नेताओंका विपुल सहयोग मिलता तो वे देश के समक्ष शिक्षाका नवीन आदर्श उपस्थित कर सकते थे। फिर भी स्वशक्ति और जनता के सहयोगानुसार उन्होंने शिक्षण सुधारके लिए जो कुछ किया वह चिर स्मरणीय रहेगा। डी. ए. वी. कालिज की तनमनधन से सहायता करने के अतिरिक्त आपने तिलक स्कूल ऑफ पालिटिक्स जैसी उच्चकोटि की राष्ट्रीय शिक्षण संस्था स्थापित की और उसे अपना ४० हजार का पुस्तकालय तथा एक लाखका मकान दान दे डाला। यही नहीं वे शिक्षण सुधारके लिए भारतीय सरकार से सदैव लडते रहे। गत सिमला अधिवेशन में भारतीय व्यवस्थापिक सभा में इस विषयमें आपने एक प्रस्ताव भी रखा था जो स्वीकृत हुआ। स्वराज्यपार्टी वालोंसे हिन्दू मुस्लिम समस्या पर गहरा मतभेद हुएभी राष्ट्रहित के लिए वे सदैव उन के साथ ही न थे वरन पथ प्रदर्शक का कार्य करते थे। भारतवर्षके जन्म सिद्ध अधिकार का ठेका अपने हाथ में लेने वाले अंग्रेजी कूटनीतिज्ञों द्वारा नियुक्त गोरे सायमन कमीशन का आज सर्वत्र जो घोर बहिष्कार हो रहा है, लालाजी उसके सूत्रधार थे। भारतीय व्यवस्थापक सभामें कमीशन के विरोध में आपहीने सबसे पूर्व प्रस्ताव उपस्थित किया था जो प्रचण्ड प्रजामत से पास हुआ। भारतीय व्यवस्थापिका सभा के सदस्य होते हुए लालाजीने समय २ जो भाषण दिये हैं उनसे विदित होता है कि लालाजी के हृदय में स्वदेश के लिए भारी दर्दथा और वे एक क्षण में भारतको स्वतंत्र देखना चाहते थे।

पिछला शिमला अधिवेशन लालाजी का अंतिम भारतीय व्यवस्थापक सदस्यता का जीवन था। इस सैशन में आपकी ३१४ वक्तृताएं हुई

वक्तृताएं क्या थीं नौकर शाही के लिए अभिशाप था। आपका एक २ शब्द अमूल्य था। आपके प्रत्येक वाक्य से यही टपकता था कि आप एक क्षण के लिए भारत को परतंत्र नहीं देखना चाहते। आप की सिंह गर्जना से असेम्बली भवन गूंज उठता था। शोक, अब वह सिंहगर्जना सुनने को न मिल सकेगी।

गत ३० अकतूबर १९२८ को गोरा सायमन कमीशन लाहौर पहुंचा। लाहौर के मजिस्ट्रेट ने कमीशन को जनता के विरोधी प्रदर्शनसे बचाने के लिए शहर में १४४ दफाकी घोषणा करके जुलूस तथा सभाएं करने की मनाई करदी थी। लेकिन लाहौर की जनता काले झंडों से कमीशन का स्वागत करना चाहती थी। एक बडे भारी जुलूस की पहले सेही तैयारी हो चुकी थी। सौभाग्य से लालाजी भी उसीदिन इटावा हिन्दू कांफ्रेंस से लौटकर लाहौर पहुंचे और १४४ दफा की घोषणा सुनकर उन्हों ने प्रोसेशन में सम्मिलित होनेका निश्चय कर लिया। यथा समय जुलूस निकला। हजारों की संख्या में काले झंडे हाथ में लिये लाहौर की जनता स्टेशन की ओर चल पडी। लाला लजपतराय तथा लाहौर के अन्य कार्यकर्ता जुलूस के आगे २ थे। स्टेशन के समीप जाकर जुलूस रुक गया और सायमन कमीशनके आगमन की प्रतीक्षा करने लगा। वन्देमातरम् और सायमन वापिस जाओ की ध्वनि से आकाश गूंज उठा। पुलिस झल्ला गई। सारजेन्ट इस दृश्य को न देख सके और बिना किसी सूचना के अकारण जनता पर लाठियां चलानी शुरू कीं। जुलूसके आगे वाले प्रायः सबही नेताओं के चोट आई। लालाजी का छाता टूट गया और उनके कंधे तथा छाती में सख्त चोट लगी। जिस गोरे सारजेन्ट ने लालाजी पर लाठीका प्रहार किया था वह लाहौर का पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट बताया जाता है। लालाजी ने उस से कहा कि " अगर तुम मनुष्य हो तो अपना नाम बताओ " किन्तु वह कापुरुष अपना नाम तक बताने का साहस न कर सका। लालाजी के आहत होने से जनता बेचैन हो उठी मगर लालाजी

ने कहा कि भाइयो यह समय शांत रहने का है–विदेशी सरकार इसी प्रकार के अत्याचारों से नष्ट होगी। आपने आहत हो कर भी जनता को शांत रखा वरना उसदिन लाहौर में खून की नदियां बह निकलतीं।

उस ३० अकतूबर की चोट से लालाजी को बड़ी पीड़ा हुई। छाती और कमरमें भारी दर्द रहने लगा। उसी से ज्वर भी आगया और बेहद कमजोरी महसूस करने लगे। उनकी छाती में इस लट्ठ प्रहार से २ इंच गहरा घाव हो गया था और छाती सूजगई थी–दर्द बेहद था। कौन जानता था कि हमारा नरकेशरी उसदिन आहत हो कर फिर न उठेगा। देश के दुर्भाग्य से गत १७ नवम्बर १९२८को स्वनामधन्य नरकेशरी लाला लाजपतराय जी ने ७॥ बजे परलोक के लिए प्रस्थान किया। आजन्म भारतभूमि की सेवा कर के अंत में यह तुच्छ शरीर भी उसी की भेंट कर दिया। स्वराज्य प्राप्ति और स्वदेश के सम्मान रक्षार्थ आपने अपना बलिदान कर दिया। लालाजी के डा. धर्मवीर और डा. गोपीचंद का कथन है कि लालाजी के यदि उसदिन ३० अकतूबर को लाठी की चोट नहीं लगती तो लालाजी अभी वर्षों जीते। इस में कोई सन्देह नहीं कि लालाजी की मृत्यु का कारण वही चोट है और लालाजी की इस असामयिक मृत्यु के लिए पंजाब सरकार उत्तरदायी है। कायदे और कानून के झमेले में हमें पड़ना अभीष्ट नहीं है, नौकरशाही कोही यह खींचतान मुबारक हो। देश तो यह जानता है और मानता है कि हमारे नेता को पुलिसने मारा है और विज्ञ डाक्टरों का भी यही स्पष्ट मत है कि अगर उसदिन लालाजी पर लाठी प्रहार नहीं होता तो निसंदेह लालाजी वर्षों जीवित रहते। अस्तु।

लालाजी आजन्म भारतमाताकी सेवा करके अन्त में उसीके चरणों में अपना जीवन भी बलिदान कर गये और भारतीय नवयुवकों को बता गये कि परतंत्रता में जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा स्वतंत्रता के लिए लड़ते २ मर मिटनाही देशकी सबसे बड़ी सेवा है। हम चाहते हैं कि भारतवासियों में यही स्वाभिमान जागृत हो और वे भारतमाताकी स्वतं-

व्रता क लिए हंसते २ बलिदान होना सीखें। हमें पूर्ण विश्वास है कि लालाजी का बलिदान व्यर्थ नहीं जावेगा। भारत के नवयुवक स्वतंत्र होकर अपने महारथी के खूनका बदला लेंगे। परमेश्वर भारतवासियों को बलवान करें जिससे भारतभूमि शीघ्रातिशीघ्र विदेशी पंजेसे मुक्त होकर स्वातंत्र्योपभोग करे। हे सर्वशक्तिमान वरदान दो कि भारत में लालाजी समान असंख्य वीर उत्पन्न होकर इस पवित्र भूमि का कल्याण करें।

इस जीवन के संकलन में हमें अनेक हिन्दी तथा अंग्रेजी पत्र पत्रिकाओं तथा श्री. चंद्रशेखर पाठक कृत देशभक्त लाला लाजपतराय नामक पुस्तक से बडी सहायता मिली है अतः हम उनके कृतज्ञ है। इसके अतिरिक्त हमने इस पुस्तक में जिन कवियों की लालाजी के बलिदान विषयक कविताएं संकलित की हे उनका आभार प्रदर्शन करना भी हम अपना कर्तव्य समझते है। ओ३म् शम्।

विश्वम्भरप्रसाद शर्मा।

महारथी लाला लाजपतराय

(सचित्र संपूर्ण जीवन चरित्र)

प्रथम अध्याय ।

वंश परिचय ।

वीरभूमि पंजाब के लुधियाने जिले में जगरांव एक प्रसिद्ध कसबा है । हमारे चरित्र नायक स्वनामधन्य लाला लाजपतराय के वंशज इसी जगरांव स्थान में निवास करते थे । वे अग्रवाल वैश्य थे और दूकानदारी उनका प्रधान व्यवसाय था । उन के बाबा रल्लामल स्वयं दूकानदारी करते थे । वे बड़े कार्यकुशल और होशियार थे । पंजाबमें जब अंग्रेजी अमलदारी हुई तो लाला रल्लामल पटवारी हो गये लेकिन उर्दू भाषा न जानने के कारण आपने पटवारीगीरी छोड़कर अपना पुराना व्यवसाय दूकानदारी ही करना शुरू किया । ला॰ रल्लामल ने अपने पुत्र राधाकिशनजी की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया । उन की इच्छा थी कि उन का पुत्र उर्दू फार्सी का अच्छा विद्वान् हो । सुतराम् श्री राधाकिशनजी आगे चलकर उर्दू और फार्सी के अच्छे ज्ञाता हुए । वे उर्दू के अच्छे विद्वान् और सुलेखक थे । उन्हों ने उर्दू में कई पुस्तकें भी लिखी थीं । नार्मल पास करने के बाद वे मुदर्रिस हो गये थे ।

जिस समय ला. राधाकृष्णजी देहली में नारमल स्कूल में पढ़ते थे उस समय वे विवाहित थे और २८ जनवरी १८६५ को आप की धर्मपत्नि ने अपने मैके में हमारे चरित्र नायक स्वनामधन्य लाला लाजपतरायजी को जन्म दिया। लालाजी की ननिहाल ढोडिग्राम में थी। उन के नाना हुकमीसिंह बंसल थे। अपने धेवते के जन्म पर उन्होंने बड़ी खुशी मनाई—उत्सव किया।

बाल्यकाल

बाल्यावस्था में लालाजी बड़े दुर्बल और क्षीण काय थे। एक बार की घटना है कि एक जाट स्त्री ने मुंशी राधाकृष्णजीसे इस बातकी शिकायत की कि आपका पुत्र बडा दुर्बल है। लेकिन यह किसे पता था कि वही दुर्बल और क्षीणकाय बालक एक दिन अपने प्रबल पुरुषार्थ से महावीर बन जावेगा। वही क्षीणकाय बालक भारतका महान नेता बना और सदाके लिए अपना नाम अमर कर गया। मुंशी राधाकृष्णजी पुत्रोत्पत्ति पर बड़े प्रसन्न हुए और इस प्रकार आनन्द और उल्लासमें बालक लाजपतरायका लालन पालन होने लगा।

मुंशी राधाकृष्णजी स्कूलमें अध्यापक थे लेकिन वे अच्छे लेखक भी थे और देश के सार्वजनिक आंदोलन से सदैव प्रेम रखते थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम उन दिनों भारतव्यापी हो रहा था। जो भारतदेश और जो विशाल हिन्दू समाज अविद्यांधकार में फंसकर इधर उधर कुमार्ग में भटक रहा था, स्वामीजी उसे सुमार्गपर लानेका उद्योग कर रहे थे। इसी सदुद्देश्य के लिए स्वामीजीने "आर्य समाज" की स्थापना की। जगह २ शास्त्रार्थ किये—हिन्दू समाज से

मिथ्या एवं अवैदिक मत मतांतरों को नष्ट कर वेद प्रतिपादित वैदिव धर्म का प्रचार करना शुरु किया। जोशीले नवयुवकों और शिक्षित पुरुषों को स्वामीजीने अपने अमृतमय उपदेश से मुग्ध कर लिय और जगह २ आर्य समाज की स्थापना होने लगी। पंजाब प्रान्त मे आर्य समाजके आन्दोलनने बहुत जोर पकडा। स्वामीजीने स्वयं पंजाब में बहुत समय तक रहकर बहुत प्रचार किया था। इसलिए पंजाब आर्य समाज आदोलन के लिए बड़ा उपयोगी स्थान बन गया।

लाला राधाकृष्णजी भी इस लहर से अछूते न बचे। सन् १८७७ में उनपर भी स्वामी दयानंद का सदुपदेश काम कर गय और वे आर्यसमाजी बन गये। उन्होंने स्वामी दयानन्दजी की पुस्तकों का अवलोकन किया और उनके व्याख्यान सुनकर अपार शाति लाभ की।

सरकारी मुलाजिम होने के कारण ला. राधाकृष्णजी स्थायी रूपसे एक ही स्थान पर न रह पाते थे। कभी कहीं कभी कहीं इस प्रकार उनका तबादला होता रहता था। बालक लाजपतराय को भी अपने पिता के साथ ही रहना पडता था। उनके पिता की प्रारंभ से ही यह सदिच्छा थी कि मेरा पुत्र सुयोग्य बने—देश और धर्मकी सेवा करे। इस लिए उन्होंने बालक लाजपतराय की बड़े अच्छे ढगसे शिक्षा दीक्षा प्रारंभ की। पिताजी की भाति लालाजी की माता भी पर विदुषी और बड़े साधु स्वभाव की महिला थीं। वे बड़ी सादा, किफायतशार और खुश मिजाज थीं। लालाजी के जीवन पर माताके इन अपूर्व गुणों का बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। और इसमें कोई

शक नहीं कि माता पिता की सुयोग्यताका ही यह शुभ परिणाम, है कि आज उनके पुत्र के लिए ३३ करोड भारतवासी बिलख बिलख कर रो रहे है।

विद्यार्थी जीवन।

हम ऊपर बताचुके है कि मुंशी राधाकृष्णजी का अपने पुत्र की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान था। वे स्वयं उन्हें पढ़ाते थे और उनके सहयोगी अध्यापक भी लालाजीके पठन पाठन की ओर पर्याप्त ध्यान रखते थे। बालक लाजपतराय की स्मरण शक्ति बड़ी प्रबल थी। अपनी कक्षामें वह एक होशियार विद्यार्थी माना जाता थां। १३ वर्ष की अवस्था में लालाजी ने अंग्रेजी मिडिल पास किया और वजीफा पाने लगे। उसके बाद ऐण्ट्रेंस पास करके वे लाहौर कालिज में भर्ती हुए। वहां भी दो वर्ष तक आपको वजीफा मिलता रहा। सन १८८९ में लालाजीने वकालत की अंतिम परीक्षा पास की। ३० परीक्षार्थियों में लालाजी कानूनकी परीक्षा में द्वितीयोत्तीर्ण हुवे।

विद्यार्थी जीवन में ही लालाजी पर आर्य समाज के संस्कार पड़ चुके थे। यही नहीं, पिताजाके सार्वजनिक आंदोलन से संबंधित होने के कारण लाला लाजपतराय विद्यार्थी अवस्थासेही देशकी सार्वजनिक प्रगति का अध्ययन करने लगे। मुंशी राधाकृष्णजी स्वयं कांग्रेस के भक्त थे। उन दिनों देशभक्तों में सर सैयद अहमदखां का नाम था। मुंशी राधाकृष्णजी भी उनके अनुयायी थे लेकिन जब सर सैयद के विचारों ने पल्टा खाया और वे सांप्रदायिता के संकुचित दायरे में फंसकर कांग्रेस पर दुलत्तियां झाड़ने लगे तो मुंशी राधा-

कृष्णजीने सर सैयद के नाम कोहनूर पत्र में एक बड़ाही तर्कपूर्ण खुला पत्र प्रकाशित कराया और उनकी नीति का विरोध किया मुंशी राधाकृष्णजी के इन समस्त गुणों का प्रभाव उनके सुपुत्र प पड़ा और वे विद्यार्थी जीवन समाप्त करने से पूर्व ही इन सब कार्य में दिलचस्पी लेने लगे और आर्य समाज के प्रति तो उनके हृदय में बड़ा ही प्रेम एवं भक्ति उत्पन्न हो गई।

जिस प्रकार बहुधा पिता अपने पुत्रों को मारापीटा करते हैं उस प्रका लालाजी कभी नहीं पिटे। वे बाल्यावस्थासे ही बड़े गंभीर थे। अत उनके पिता को उन्हें पीटने का कभी अवसर ही नहीं मिला इस बारेमें मुंशी राधाकृष्ण जीने स्वयं लिखा था कि "मुझे अच्छी तरह याद है कि सारी उम्रमें मैं कभी लाजपतसे नाराज नहीं हुआ सिवाय एक बारके उस मौके पर मुझे उसे दंड भी देना पड़ा। इस दंडक कारण यह था कि मैं दिन छिपे बाद न खुद बाहर रहता था औ न घरके किसी आदमी को बाहर रहने देता था। एक दिन क बात है कि दिन छिप गया और लाजपत घर न आया मै ने सारा शहर (रिवाडी) ढूंढ लिया, कहीं पता न चला अंतमें पता लगा कि वह अपने अन्य दो साथियों सहित शहर से बाहर कबड्डी खेल रहा है। मैं उसको वहां से पकड़ लाया और घ पर उसको मैं ने तीन थप्पड़ लगाये। उसके बाद फिर कभी मै ने कोई बात उसकी ऐसी नहीं देखी जो मेरी इच्छा के खिलाफ़ हो।"

आर्य समाजी के सुपुत्र में आर्य समाज का प्रेम होना बहुत स्वाभाविक है। लालाजी में भी यह स्वाभाविक गुण था। लालाजी

जिस समय विद्याध्ययन करते थे उसी समय से समाज सेवामें लग गये थे। लालाजी के पिताजी स्वयं ये शब्द लिखे है कि " यद्यपि यह इस समय वकालत पढ़ता था लेकिन जियादातर समय हिन्दी उर्दू के झगडे और आर्य समाज के प्रचार में खोकर लैकचर बाजी करता फेरता " । १८ वर्ष की अवस्था में ही इन्होंने लुधियाना, अम्बाला और देहली में आर्य समाज विषयक ३ प्रभावशाली व्याख्यान दिये ।

विद्यार्थी जीवनमें ही लालाजी का विवाह कर दिया गया। उन दिनों हिन्दू समाज में बालविवाह खूब जोरोंसे होते थे। लेकिन मुंशी राधाकृष्णजी तो स्वामी दयानन्द के कट्टर भक्त थे और उनकी यही इच्छा थी कि उनके पुत्र का विवाह बाल्यावस्था में न हो लेकिन उनके पिता रल्लामल ने एक न सुनी और १३ वर्ष की बाल्यावस्थामें ही आपका विवाह हो गया।

लाला लाजपतराय के हृदय में बाल्यावस्थाही से सेवाभाव जागृत था। अनाथों और दीनों को देखकर लालाजी का बाल्य हृदय करुणा से भरजाता था। यह पवित्र भाव स्वनाम धन्य लालजी के विशाल हृदयमें मृत्यु पर्यन्त रहा। उनका जीवन ही सेवामय था। आज उसी सेवा कार्य की बदौलत लालाजी की पुण्य स्मृति ३३ करोड़ भारतवासियों के हृदय में व्याप्त है और वह तब तक जीवित रहेगी जब तक सूर्यचन्द्र विद्यमान हैं।

द्वितीय अध्याय

एक सफल वकील।

लालाजी ने कुछ समय तो अपने निवास स्थान जगरांव की मुंसिफी मेंही मुख्तारी करनी शुरू करदी लेकिन उसके पश्चात् जब वकालत पास करली तो उन्होंने हिसार में वकालत आरंभ की। लालाजी बड़े अच्छे वक्ता थे, उन की विचार शक्ति बड़ी प्रबल थी और उन का कानूनी ज्ञान प्रखर था। अतः लालाजी अल्प समयही में हिसार के नामी वकील हो गये। सार्वजनिक कार्यकर्ता होने से उन की प्रतिष्ठा भी बढ़ गई। हिसार में रहकर लालाजी ने धन और नाम खूब कमाये। वकालत करते हुए वे सार्वजनिक कार्यों में खूब भाग लेते थे।

हिसार में उन दिनों आर्यसमाज का कोई संगठन नहीं था। लालाजीने वहां आर्यसमाज का सुदृढ़ संगठन किया—समाज स्थापित किया और अपनी जेब से आर्यसमाज के कार्य संचालनार्थ १९०० रु० दान दिये। लालाजी के उत्साह को देखकर और भी दूसरे नवयुवकों में आर्यसमाज के प्रति प्रेम उत्पन्न हुआ और इस प्रकार हिसार का आर्यसमाज एक लोकप्रिय संस्था बन गई। हिसार में रहकर आपने सार्वजनिक कार्यों में यथेष्ट भाग लिया। यहां की म्युनिसिपैलिटी के भी आप ३ वर्ष तक अवैतानिक मंत्री रहे। आपकी कार्यपटुता देख कर हिसार के किसी बड़े अफसरने आपको ऐक्स्ट्रा ऐसिस्टेन्ट कमिशनर नियुक्त करने के लिए सरकार को लिखा लेकिन स्वतंत्र विचार वाले

लालाजी क्षणिक हुकूमत अथवा धनके लोभ में आकर मत्त कब स्वीकार करने वाले थे। उन्होंने सरकारी नौकरी की कभी स्वप्न में भी अभिलाषा नहीं की। वे स्वभाव से स्वतंत्र थे और अपने को दासता में जकड़ना उन्हें कभी स्वीकार न था। शिक्षा सुधार और शिक्षा प्रचार की ओर लालाजी की प्रारंभसेही रुचि थी। सुतराम् उन्होंने हिसार में एक संस्कृत विद्यालय की स्थापना की।

डी. ए. वी. कालिज।

हिसार में वकालत करते हुए लालाजी आर्य समाज के प्राण थे और चूंकि लाहौर उस जमाने में आर्यसमाज आंदोलन का पंजाब में मुख्य केन्द्र था और लालाजीके इष्ट मित्र सब वहां आर्यसमाज के कार्य में भाग लिया करते थे इस लिए लाला लाजपतरायजी भी अक्सर लाहौर जाते रहते थे। आर्यसमाज का कोई ऐसा उत्सव नहीं था जिसमें लालाजीने भाग न लिया हो। लालाजी और तत्कालीन लाहौर आर्यसमाज के कार्यकर्ता लाला हंसराज, स्वर्गवासी पं. गुरुदत्तजी विद्यार्थीने वर्तमान शिक्षा पद्धति का सुधार करने की आशा से १ जून सन १८८९ को लाहौर में अपने गुरुवर्य्य स्वामी दयानन्दजी महाराजकी पवित्र स्मृतिमें डी. ए. वी. कालिज की स्थापना की। लालाजीने इस संस्था की तन मन धन से खूब सहायता की। हिसार में रहते हुए भी आप मास में दोचार बार डी. ए. वी कालिज को देखने आते थे। आर्यसमाज के प्लेटफार्म से डी. ए. वी कालिज के लिये लालाजी जब कभी अपील करने खड़े होते थे तो धन की वर्षा होने लगती थी। मुनिवर गुरुदत्तजी लालाजी

के अभिन्न मित्र थे। उनकी मृत्यु से लालाजी को बड़ी वेदना हुई। लालाजीने अंग्रेजी में उनका जीवन चरित्र भी लिखा है। वे अपने स्वर्गीय मित्र की याद में कभी २ बड़े दुखी हो जाते थे। उनके परिवार की लालाजीने यथेष्ट आर्थिक सहायता भी की।

लाहौर आगमन।

सन १८९२ ई. में लालाजी हिसार से लाहौर चले आये और चीफ कोर्ट में वकालत करने लगे। लालाजी कभी झूठे मुकदमे नहीं लेते थे और अपने मवक्किलों को सदा संतुष्ट रखने का प्रयत्न करते थे। एक मवक्किल जो एक बार लालाजी के पास आजाता था वह फिर अन्यत्र नहीं जाता था। दिन प्रति दिन लालाजी की लोकप्रियता बढ़ती ही गई और वे एक अच्छे सफल वकील बन गये। लाहौर उन दिनों सार्वजनिक आंदोलनोंका घर बना हुआ था और लालाजी को सार्वजनिक आन्दोलनों में भाग लेना अतिप्रिय था ही इस लिए लाहौर में लालाजी को इन सब झंझटों से एक मिनिट का भी अवकाश नहीं मिलता था। यों तो सन १८८८ सेही लालाजी देश के राजनैतिक विचारों में भाग लेने लगे थे। उन्होंने सर सैयद अहमखां के कांग्रेस विरोधी विचारों की बड़ी तर्कपूर्ण और ओजस्वी भाषा में खुले पत्रों द्वारा आलोचना की थी। सर सैयद का प्रभाव लालाजी और उनके पिता दोनों पर था इसलिए लालाजीने उक्त पत्रों के नीचे The son of an old follower of yours अर्थात् आपके पुराने अनुयायीका पुत्र लिखा करते थे। उन्होंने सर सैयद की "गदर और उसके कारण" नामक सन १८५८ में लिखी पुस्तक पढ़ी थी और उनके

Social reformer तथा Aligarh Institute gazette को भी पढ़ा करते थे। लालाजी के पिता सर सैयद के भक्त थे और उनके विचारों का बड़ा मान करते थे। लालाजी पर भी वही संस्कार पड़े । उनके पिता उन्हे सर सैयद की पुस्तकें और पत्र पढ़ाया करते थे।

लालाजी के उक्त पत्रों का राष्ट्रीय भारत में बड़ा मान हुआ। उनकी हजारों प्रतियां छपवाकर बटवाई गईं। इस प्रकार लालाजी का राजनीति में प्रवेश हुआ। आर्यसमाज में विशेष भाग लेते हुए भी वे राजनीति से प्रथक नहीं हुए और प्रत्येक कांग्रेस में शामिल होते रहे। १८८८ में वे इलाहाबाद कांग्रेस में सर्व प्रथम सम्मिलित हुए। आपने सर सैयद की अलीगढ़ पालिसी संबंधी पुस्तक का उसही अवसर पर अनुवाद किया था। लालाजी की राजनैतिक साहित्य में प्रारंभ से ही रुचि थी। उन दिनों लालाजी इटलीकी राजनीति का अध्ययन कर रहे थे। आपने उर्दू में देशभक्त मेजनी तथा गैरीबॉल्टी का जीवन चरित्र लिखकर पंजाब के नवयुवकों में स्वदेशभक्ति का बीजारोपण किया था।

सार्वजनिक जीवन.

हम ऊपरही कह आये हैं कि लाहौर में लाला लाजपतराय का प्रायः अधिकांश समय सार्वजनिक कार्यों में व्यय होता था। आर्य समाज के प्रचार कार्य के अतिरिक्त अन्य सामाजिक आंदोलनों के सूत्रधार भी लालाजी ही थे। लालाजी के लाहौर आजाने से लाहौर के तात्कालिक आन्दोलनों तथा सार्वजनिक संस्थाओं को बड़ी सहायता मिली। ऐसा कोई आंदोलन न था जहां लालाजी न दिखाई देते हों।

दुर्भाग्य से उन्हीं दिनों सन् १८९७ में देशमें भीषण दुर्भिक्ष पड़ा। दयार्द्र लालाजी का हृदय अकाल पीड़ितों की दुर्दशासे विह्वल हो उठा और उन्होंने पीड़ितों की रक्षा के लिए अपने साथियों को साथ बड़ा कार्य किया। आपने उनकी सहायताके लिये अनाथ सहायक आंदोलन आरंभ किया, एक रिलीफ कमेटी स्थापित की और इस प्रकार असंख्य निराश्रय व्यक्तियोंकी रक्षा की। फीरोजपुर जिलेके प्रसिद्ध श्रीमद्‌यानंद अनाथालय का प्रबंध करने के कारण लालाजी अनाथरक्षा के कार्य में बड़े निपुण थे। अतः अकाल पीड़ितों तथा अनाथों की रक्षा उन्हों ने बड़े व्यवस्थित ढंगसे की। सन १८९७ से सन १९०१ तक आप इसी दीन हितकारी कार्य में संलग्न रहे। सरकारने भी एक अनाथ रक्षक समिति स्थापित की थी लेकिन उस का कार्य अधिकतर ईसाई मिश्नरियों के हाथ में था। वे छोटे २ बच्चों को उनके माता पिता से अलग कर देते थे। दूसरे अकाल पीड़ितों को बहकाकर फुसलाकर और लोभ दिखाकर ईसाई पादरी उन्हें ईसाई बना लेते थे। अकेले राजपूतानेसे इस प्रकार ७० हजार हिन्दू ईसाई बन चुके थे। सारे देशमें भारी अकाल था और ईसाई मिश्नरियों के पास धन तथा सरकारकी पूरी शक्ति थी अतः उन्होंने उस के सहारे सहस्त्रों हिन्दुओं को ईसाई बनाया।

हिन्दू उस समय निर्जीव थे। स्वधर्मका स्वाभिमान प्रायः विलुप्तसाही हो रहा था। इस लिए ईसाई मिश्नरियों के कार्य में किसी प्रकार का विघ्न न पड़ सका। हां पंजाब के नौजवानों में जोश था महर्षि दयानंद की कृपा से पंजाबी नवयुवक धर्म के असली रहस्य को समझते थे। उनकी रग २ में हिन्दुत्व जोश मार रहा था। वे

ईसाई पादरियों की कृतिसे अपरिचत नहीं थे। उन्होंने ईसाइयों के विरोध में तीव्र आन्दोलन किया। उनके पंजे से सैंकड़ों अनाथ बच्चे और स्त्री पुरुष बचाये। लेकिन् मुट्ठीभर कार्य कर्ता आखिर क्या २ करते। लाला लाजपतराय इस आंदोलान के प्रमुख थे। उन्होंने पत्रों द्वारा भी इस विषय में खूब आंदोलन किया। सरकार को मजबूर होकर १९०१ में अकालकी जांच करने के लिए फेमिन कमिशन नियुक्त करना पड़ा। सरकारने इस कमीशन के समक्ष गवाही देने के लिए जब लालाजी को बुलाया तो उन्हों ने निर्भीकतापूर्वक अपनी शिकायतें सामने रखीं। सरकार को अंतमें अपनी भूल स्वीकार करनी पड़ी। और तबसे अपनी नीति बदल दी। सरकारने आज्ञा दे दी कि बच्चों को उन के माता पिता से प्रथक न किया जाय। यथासंभव उनके माता पिताकी खोज करके उन्हें उन के पास सुरक्षित भेज दिया अन्यथा उन के सजातीय अनाथालयों में भेज दिया जाय। इसमें कोई संदेह नहीं कि लालाजी के इस पुनीत कार्य से हजारों प्राणी विधर्मी होने से बच गये।

सन १९०५ में जब कांगड़े में भूकंप आया तो वहां भी लालाजी ने भारी सेवाकार्य किया। एक व्यवस्थित अनाथालय स्थापित कराया। लाहौर आर्यसमाज की ओर से उन्होंने इस कार्य की सहायतार्थ एक समिति बनाई और मंत्री की हैसियत से बहुत सा रुपया एकत्र कर पीड़ित भारतीयों की रक्षा की।

तृतीय अध्याय।

राजनीति प्रवेश।

यों तो लालाजी सन् १८८८ से ही राजनीतिमें प्रवेश कर चुके थे। सर सैयद के विरोध में लिखे गये उनके पत्रोंने ही यों तो १८८८ में लालाजीके लिए राजनैतिक क्षेत्र का दरवाजा खोल दिया था लेकिन लाहौर में आकर उनके लिए मैदान और भी खाली होगया। आर्यसमाज उन दिनों एक जीवित जागृत संस्था थी और इस में कोई शक नहीं कि लालाजी को राजनीति में प्रवेश कराने का श्रेय आर्यसमाज ही को है लेकिन उन दिनों लाहौर में ऐसे अदम्य उत्साही सज्जनों का प्रायः अभाव साही था। जो दोचार उत्साही कार्यकर्ता थे वे आर्यसमाज के प्रचार तथा डी. ए. वी. कालिज की सेवा में लगे हुए थे। लालाजी सदैव पुरजोश थे। वे केवल एकही क्षेत्र में कार्य करते रहने के पक्षपाती न थे। इसी बातपर उनका अपने सहयोगी कार्यकर्ताओ से प्रायः मतभेद भी रहता था लेकिन वे उसकी पर्वा न करते थे। उनका शरीर प्राणी-मात्र के लिए था। जहां एक ओर पुनीत वैदिक धर्म प्रचार की लगन लालाजी में थी वहां दूसरी ओर प्यारी मातृभूमि इस भारतवर्ष की दुर्दशा से भी लालाजी का हृदय भरा हुआ था। वे जितनी समाज की सेवा करते थे उससे कहीं अधिक स्वदेशोन्नति के लिए भी प्रयत्न करते थे। सन १८८८ के पश्चात् उन्होंने प्रायः सबही

कांग्रेस अधिवेशनोंमें भागलिया । देशके प्रायः सबही कार्यकर्ता लालाजीसे परिचित होने लगे । लालाजी की विचारशक्ति और वाक्‌शक्ति ने जनता पर अच्छा असर पैदा किया हुआ था ।

इंगलेंड यात्रा

सन १९८९ ई. में अ. भा. राष्ट्रीय महासभा की स्थापना हुई । प्रत्येक वर्ष महासभा के अधिवेशन हुए । देशमें धीरे २ स्वतंत्रताकी लहर बहने लगी । सन् १९०५ में कांग्रेस देशकी शासन प्रणाली के सुधार की आवश्यकता अनुभव करने लगी । इस के लिए तत्कालीन काग्रेसके कार्यकर्ताओंने भारतीय सरकार के सामने कोई प्रार्थना न कर सीधे इंगलेंड में ही आंदोलन करने आर देशकी मांग को अंग्रेजी प्रजा के समक्ष रखने का निश्चय किया । इस शुभ कार्य के लिए कांग्रेसकी ओर से लाला लाजपतराय तथा मि० गोपालकृष्ण गोखले प्रतिनिधि निर्वाचित किये गये । उस समय देशकी आंखें इनही दो वीर नवयुवकों पर पड़ी थीं। सन १८८९ से ही *लगातार कार्य करने के कारण लाला लाजपतराय* का स्वास्थ्य बहुत गिर गया था और एकान्त सेवन की नितांत आवश्यकता थी लेकिन देशकी मांगके समक्ष लालाजी ने स्वास्थ्य सुधार की चिंता को एक ओर फेंक दिया और मि० गोखले के साथ इंगलेंड पहुंचे । वहां इन दोनों वीर भारतीयों ने भारत के तात्कालिक शासन यंत्र का सच्चा स्वरूप अंग्रेजी जनताके समक्ष रखा । इंगलेंड में जगह २ लालाजी के भाषण हुए । उदार, अनुदार, नर्म, गर्म, श्रमजीवी तथा

बड़े २ व्यापारियों के बीच आपके भाषण हुए। यह ठीक है कि इस डैपुटेशन का उद्देश्य सिद्ध न हुआ लेकिन इन्होंने अपने ओजस्वी भाषणोंसे इंगलैंड की जनता तथा ब्रिटिश सरकार क कलपुर्जो को यह भली भांति सुझा दिया कि भारतवासी अब अधिक समय तक दुर्दशाग्रस्त अवस्था में पड़े रहना नहीं चाहते। वे अब जाग रहे है और उनके अधिकारों पर अधिक कुठाराघात नहीं किया जा सकता।

इंगलैंड से लालाजी यूरप के विभिन्न स्थानों में घूमे और फिर अमरीका गये। इन पाश्चात्य देशों में जाकर लालाजीने बहुत कुछ सीखा। पाश्चात्य देशों की विज्ञान, कला तथा शिक्षासंबंधी तीव्र गति देखकर लालाजी दंग रह गये। वहांका प्रजातंत्र शासन देखकर उनके हृदयमें अपने देशकी दुर्दशा पर बड़ी ग्लानि उत्पन्न हुई। इस संबंधमे लालाजी स्वयं लिखते है.—

"I went to England, I went to France, I went to other Europeon Countries and to America, but where ever I went I carried with me the shame of a Conquered race." अर्थात्—

"मै इंगलैंड गया हूं, फ्रांस गया हूं और यूरोपीय अन्य प्रदेशों तथा अमरीका में भी मै गया हूं किन्तु जहां कहीं मै गया एक विजित जातिकी लज्जा मेरे साथ रही"। स्वदेशकी पराधीनता से लालाजी कितने दुखी थे यह उपरोक्त वाक्य से भली भांति प्रकट हो जाता है। मि० गोखले के साथ कुछ काल तक इंगलैंड में राज-

नैतिक सेवा कार्य करके लालाजी भारत को लौट आये । उनका हृदय स्वदेशकी परतंत्रता से इस यात्रा में अत्यन्त दुखी होगया था। वे अपनी प्यारी भारतभूमि की स्वतंत्रता के लिए तिलमिला उठे थे। फलतः इंगलेंड से वापिस आने पर लालाजी ने भारतभूमि के सेवा में ही अपना सारा समय लगाना शुरु कर दिया।

बनारस कांग्रेस।

विलायत यात्रा से लौटकर लालाजी ने देखा कि देश में एक कौने से दूसरे कौने तक सरकार के प्रति विद्वेष फैला हुआ है। बंगभंग के कारण भारतीय जनता सरकार से बड़ी असंतुष्ट थी उसपर सरकार ने बंगभंग विरोधी आंदोलन को कुचलने के लिए जिस दमननीति का आश्रय लिया उस से भारतवासी और अधिक भड़क गये थे। जगह २ सरकारकी इस नीति का घोर विरोध होने लगा। बंगालकी घटना थी लेकिन पंजाब, यू. पी. और महाराष्ट्र तक इस आंदोलन से न बच सके। देश में एक सिरेसे दूसरे सिरे तक बंगभंग विरोधी आंदोलन का विस्तार हो गया। १९०५ में बनारस में राष्ट्रीय महासभा हुई। महासभा के समक्ष यही मुख्य विषय था। लालाजी भी इस महासभा में सम्मिलित हुये और आप का जो जोरदार भाषण हुआ उससे नौकरशाही के कल्पुर्जे हिल उठे—लोग दंग रह गये।

सरकारकी बंगभंग संबंधी नीति के विरोध में लालाजी ने ही प्रस्ताव उपस्थित किया था और उसके ऊपर आपने सारयुक्त एवं ओजपूर्ण भाषण दिया था। लालाजीने प्रिंस आफ वेल्स के स्वागत संबंधी प्रस्तावका भी कांग्रेस में घोर विरोध किया था। यह भारतीय

नवयुवकों में विद्युत प्रसार करने वाला था । बंगभंग आंदोलन में लालाजी के उक्त भाषण ने घृताहुतिका कार्य किया और बड़े जोरों के साथ इस आंदोलनने जोर पकड़ा ।

महासभा से लौटकर लालाजी ने अपने समय का अधिकांश भाग स्वदेश सेवामेंही लगाना शुरू किया। स्वदेशी की लहर उन दिनों भी जोरोंपर थी। बंगभंग का बदला भारतवासी उस समय विलायत माल का बहिष्कार कर के चुकाना चाहते थे। लालाजीने इस आंदोलन को विशेष रूपेण अपने हाथ में लिया। स्वयं स्वदेशी भक्त तो थे ही। इस लिये जनता पर आप के व्याख्यानों का गहरा असर पड़ा और पंजाब में विलायती माल का बहिष्कार तथा स्वदेशी प्रचार का आंदोलन जोरों के साथ शुरू हो गया। आज से २२ वर्ष पूर्व लालाजी बड़े सुदृढ़ स्वदेशी विचार वाले थे । इस विषय में उन्हों ने कहा था कि—" अपने संबंध में मैं कह सकता हूं कि मैं एकदम स्वदेशी हूं और गत २५ वर्षो से जब से मैने स्वदेशानुरागी शब्दका प्रकृत अर्थ समझा है; तबसेही बराबर स्वदेशी वस्त्र व्यवहार करता हूं। मेरे लिए स्वदेशानुरागी और स्वदेशी दोनोंही पर्यायवाचक शब्द हैं तथापि मेरी यह धारणा नहीं है कि सब प्रकार का व्यवसाय करने वाले स्वदेशानुरागी नहीं हैं। क्यों कि मैं यह नहीं कह सकता, कि वे व्यापारी जो खुला व्यापार करते हैं आवश्यकता पड़ने पर स्वदेशी मानने वाले नहीं रहेंगे। जो होना हो सो हो, परन्तु मैं स्वदेशी आंदोलनको बहुत महत्व देताहूं। मैं इसे अधिकार प्राप्त करने की एक दवा समझता हूं । इसका अनवरत व्यवहार हमारे देशका

दुःखभार हलका करदेगा। मै इसे अपने देशकी मुक्ति का साधन समझताहूं। स्वदेशी व्रत हमें आत्म सम्मान प्राप्त करने वाला, आत्म निर्भर करने वाला, स्वावलंबी तथा आत्म-स्वार्थ-त्यागी बना सकता है। स्वदेशी व्रत हमें सिखा सकता है कि हम पूंजी, व्यवहार, आमदनी और श्रमिक शक्तियों का प्रयोग कैसे करें और जाति पांतिका विचार किये बिना भारतीयों की पूर्ण भलाई की ओर क्या कर सकते है। धार्मिक तथा सांप्रदायिक विभेद रहने पर भी यह हमें एक कर सकता है। यह हमें एक ऐसी वेदी दिखा सकता है कि जिस पर हम हृदय की सची भक्ति और विश्वासकी दृढ़ता से खड़े होकर अपनी मातृभूमि की शुभ कामना कर सकते है। हमारी समझमें स्वदेशी, युक्तभारत (United India) का एक साधारण धर्म होना चाहिये; परन्तु पक्का स्वदेशी रहने पर भी मै दशकी साम्पत्तिक अवस्था, आवश्यकताओं की पूर्ती और विज्ञानकी भित्तिपर देशकी शिल्पोन्नत्ति का इच्छुक हूं।"

पाठक देखें स्वदेशी के विषयमें कैसे उन्नत विचार है। लालाजी विचार शील सज्जन थे। बिना विचारे कभी कुछ नहीं कहते थे। स्वदेशी आंदोलनको पंजाब में लालाजी ने खूब प्रचारित किया। पंजाब के नवयुवकों में स्वदेश प्रेमकी अग्नि भड़का दी। नौकरशाही आप के प्रति बुरे भाव रखने लगी। गोरे और अर्ध गोरे समाचारपत्र आपको क्रांतिकारी बताने लगे। चहुं ओर सरकारी दल में लालाजी के व्याख्यानों की समालोचना होने लगी, उनकी स्वदेशभक्ति पर टीका टिप्पणी की जाने लगी। सरकार परस्त समाचार पत्रों ने लालजी

को खुले आम क्रांतिकारी और फौजको भडकानेवाला बताकर लालाजी को राजविद्रोह में गिरफतार करने के लिए खूब सरकार को उत्तेजित किया । उनके बनारस कांग्रेस के बंगभंग विषयक भाषण की इन गोरे पत्रों ने खूब आलोचना की । इसमें कोई शक नहीं कि लालाजी का यह भाषण बड़ा जोशीला था—नौकरशाही का मुंह तोड़ जवाब देनेवाला था । लेकिन उसमें राजविद्रोह की गंध भी न थी । फिर भी गोरे पत्रों ने यथाशक्ति उसे लेकर खूब हल्ला मचाया । उधर पंजाब में भी सरकार भूमि कर वृद्धि, आबपाशी कर वृद्धि संबंधी कई बिल पास करके पंजाब के कृषकों का रक्त पी जाना चाहती थी । लालाजी ने सरकार की इस अन्यायपूर्ण कार्य-वाही का घोर विरोध किया । व्याख्यानों और लेखों द्वारा सरकार की आफत बुलादी गई । पंजाब के वीर नवयुवक लालाजी के इस आंदोलन से जागृत हो उठे और चहुं ओर सरकारी नीति का घोर विरोध होने लगा । सरदार अजीतसिंह और लाला लाजपतराय दोनोंही पंजाब में इन आंदोलनों के सूत्रधार थे । जनता इन के इशारे पर चलती थी—इन्हें पूजती थी । उधर बंगालमें विपिनचन्द्रपालने सरकार की बंग भंगिनी नीति के विरोध में घोर आंदोलन कर रखा था । बंगाल के सहस्रों वीर नवयुवक बंग रक्षा के लिए हथेली पर जान धरे फिरते थे और उधर महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक के हाथ में नेतृत्व था । इस प्रकार देशमें चहुं ओर सरकार के प्रति असंतोष फैल रहा था । उचित तो यह था कि सरकार जनताके इस असंतोष का दमन न करके असंतोष के

कारणों का पता लगाती और उन्हें दूर कर जनता को शांत करती। लेकिन सरकार ने इस न्याय्य मार्ग का अनुसरण न कर अन्याय मार्ग दमन नीतिकाही आश्रय लिया।

निर्वासन

जनता के असंतोष को दूर न कर के आंदोलन करने वालों को अकारण, निराधार पकड़ कर निर्वासित कर देना सभ्य सरकार का कार्य नहीं है। लेकिन अंग्रेज कूट नीतिज्ञ इसी अन्याय को न्याय समझते हैं। इस लिए पंजाब में जनता के असंतोष को दबाने के लिए सरकार ने सन १८१८ के रेगूलेशन नं. ३ के अनुसार ९ मई सन् १९०७ को लालाजी को दो बजे दिनके गिरफतार किया। लालाजी को अपनी गिरफतारी पर यत्किंचित भी दु.ख या आश्चर्य न हुआ क्यों कि वे पहलेही से इसके लिए तैयार बैठे थे। अपने पूज्य पिताजी से पहलेही आशीर्वाद प्राप्त कर चुके थे। स्वदेश सेवा के लिए वे कठिन से कठिन आपत्तियां तक उठाने को तैयार थे। उनके निर्वासन से पूर्वही यों तो देशमें बंगभंग तथा यूनीवर्सिटीज बिल को लेकर सरकार के प्रति असंतोष फैला हुआ था और लालाजी के अकारण निर्वासन से तो और अधिक असंतोष फैला। समाचार पत्रोंने सरकार की बड़ी निन्दा की—पार्लियामेंट तक में लालाजी की अकारण गिरफतारी के लिए प्रश्न हुए। उस समय पंजाब सरकार के प्रमुख स्व० डी. इबेटसन थे। इन्हीं ने लालाजी को निर्वासित किया था। आपको लालाजी की उपस्थिति से ऐसा भय मालूम हुआ गोया लालाजी यदि अधिक दिन तक इसी प्रकार

आन्दोलन करते रहे तो पंजाब से ब्रिटिशराज का तख्ता उलट जावेगा। यह धारणा गलत थी और लालाजी को बिना किसी प्रमाण के केवल संदेह पर गिरफतार करलेना सरकार के लिए बड़े कलंक की बात थी। सरकार ने शायद समझा था कि लालाजी के गिरफतार होने के बाद जनता शांत हो जावेगी और सरकार की मनमानी का कोई विरोध न होगा लेकिन यह कैसे हो सकता था। देशका एक महान कार्यकर्ता अकारण निर्वासित कर दिया जाय और जनता शांत हो कर बैठ जाय यह भला कभी हो सकता था। लालाजी के निर्वासनसे वही हुआ। जनता में असंतोष की लहर और जोरों से बढ़ी और सरकारको विवश हो कर असंतोषोत्पत्ति के कारण रावलपिंडी के भूमिकर वृद्धि संबंधी बिलको रद्द करना पड़ा। सरकार यदि पहले ही से जनता के भावों की आदर करती तो इतना असंतोष ही न फैलता और न निरपराध लालाजी को अकारण निर्वासन कष्ट ही उठाना पड़ता।

गिरफतार कर के लालाजी को मांडले पहुंचा दिया गया। वहां लालाजी को प्रारंभ में बड़े २ कष्ट उठाने पड़े। लेकिन सब को शांतिपूर्वक सहन किया। जब आप जहाज द्वारा माडले ले जाये जा रहे थे तो आप को खाने पीने और रहने के स्थान तक का बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। साथ के अंग्रेज इंस्पेक्टर ने जहाज के कमान के कहने पर भी लालाजी को कोई आराम न पहुंचाया। लालाजी के साथ जहाज पर गोरे इंस्पेक्टर के साथ कुछ हिन्दुस्थानी सिपाही भी थे। लालाजी ने देखा कि उन बिचारों के आराम का सरकार कोई खयाल नहीं रखती

और अंग्रेजी सिपाहियों को हर प्रकार का आराम मिलता है, तो बड़ी व्यथा हुई। वे उन सिपाहियों को इस प्रकार कष्ट में देखकर कभी २ अपने सामान में से उन्हें दे दिया करते थे। जहाज पर लालाजी के ऊपर बड़ा कड़ा पहरा था। एकदिन गोरे सार्जेंट को देखकर लालाजी को हंसी आई और उसके पूछने पर उन्हों ने बताया कि "मेरा विचार कभी समुद्र में कूद पड़ने का न था क्यों कि मुझे पूर्ण विश्वास है कि सरकार तथा उसके कर्मचारी मेरे जीवन का मूल्य जितना समझते है, उस से कहीं अधिक अपने देश वासियों के लिये मै अपना जीवन बहुमूल्य समझता हूं।" लालाजी के इस वाक्य से उनके देशप्रेम की कैसी सुंदर सुगंध आती है। इस यात्रा में लालाजी को बड़े कष्ट उठाने पड़े पर वे उनकी कभी पर्वा न करते थे। आपकी अपार देशभक्ति और कष्ट सहिष्णुता देखकर शत्रुभी आपके मित्र हो जाते थे।

जिससमय आप मांडले स्टेशन पर उतरे तो सर्वेण्ट ऑफ इंडिया सोसायटी के मि० देवधर आपके पैरों गिर पड़े। पुलिस ने यह देखा तो जल्दी से उन्हें हटा दिया। लालाजी को एक मित्र को पैरों गिरते देखकर बड़ा संकोच हुआ और उन के सम्मानार्थ उन्हों ने अपना सिर झुका दिया। मांडले में लालाजी १८ मास निर्वासित रहे। इस निर्वासन काल में भी उन्होंने अपना कार्य जारी रखा। देश सेवा का दीर्घ चिन्तन और पुस्तक लेखनही उन के जेल जीवन के कष्टों को भुलाये हुए था। सरकार को अंत में अपनी भूल मालूम हुई और १८ मास पश्चात् आप मुक्त कर दिये गये।

चतुर्थ अध्याय।

१८ वर्ष के दीर्घ निर्वासन से लालाजी के स्वास्थ को भारी धक्का पहुंचा और आप बहुत समय तक बीमार रहे। स्वस्थ होने पर फिर आपने अपना कार्य प्रारंभ किया। सूरत कांग्रेस की उन दिनों धूम थी। देश में दो ज़बरदस्त राजनैतिक दल थे। एक के नेता लोकमान्य बालगंगाधर तिलक थे और दूसरे के मि० गोपाल कृष्ण गोखले। लोकमान्य तिलक गर्म दल वाले थे और मि० गोखले नर्म दल के नेता थे। दोनों दल वाले अपनी २ नीति को कांग्रेस द्वारा स्वीकृत करना चाहते थे। लालाजी पर दोनों दल वालों की श्रद्धा थी और सूरत कांग्रेस का सभापतित्व लालाजीकेही हाथ था लेकिन लालाजीने इस परिस्थिति में कांग्रेस का सभापतित्व स्वीकार न किया। वे कोई पार्टी न बनकर पार्टी बाजी का अंत कराना चाहते थे। इसी लिये उन्होंने सभापति के रूप में नहीं वरन् साधारण कार्यकर्ता के रूपमेंही सूरत कांग्रेस में भाग लेना उचित समझा। लेकिन होतव्यता टलने वाली नहीं थी। सूरत कांग्रेस मतभेद की दलदल में फंसी हुई थी फलतः निर्विघ्न समाप्त न हो सकी। लोकमान्य अपने दल को लेकर कांग्रेस से प्रथक हो गये। कांग्रेस माडरेटों के हाथ में रहगई। लालाजी की सदा ऐसी नीति रही है कि वे सदैव बीच की परिस्थिति में रहना चाहते थे। सुतराम् वे तिलक पार्टीको भी न छोड़ सकते थे और न कांग्रेसको ही। उन की सौम्य मूर्ति शांति और मेल चाहती थी पर नौकरशाही के शासन में वह

कहां मिल सकता था। अतः विवश होकर उन्हें कांग्रेस से बाहर रहकरही कार्य करना ठीक प्रतीत हुआ।

कांग्रेस से उदासीन होकर लालाजीने शिक्षण सुधार की ओर अपनी दृष्टि फेरी। जगह २ पाठशालाएं स्थापित कराईं और घूम २ कर नवयुवकों में स्वतंत्र शिक्षा प्रणाली के भाव भरने शुरु किये। लालाजी का प्रारंभही से यह विचार था कि देश के नवयुवकों को जब तक स्वतंत्र शिक्षा न दी जावेगी तबतक उनमें देश प्रेम उत्पन्न न हो सकेगा। अछूतों में भी शिक्षा प्रचार के लिए लालाजी ने भारी प्रयत्न किया। पंजाब के ग्राम २ में घूम कर पाठशालाएं खुलवाईं। ऐसे शुभ कार्य में बड़ी विपुल शक्ति चाहिये जिसका लालाजी को सर्वथा अभाव रहा फिर भी आपने शिक्षा सुधार के लिए महान उद्योग किया। इस कार्य से आपको विशेष प्रेम था और इस कार्य के लिए लालाजीने हजारों रुपये अपनी जेब से खर्च किये थे। लालाजी अपनी कमाईका अधिकांश भाग देश सेवा में अर्पण कर देते थे। वे डी. ए. वी. कालिज के दसियों वर्ष उपसभापति और मंत्री रहे तथा विद्यार्थियों को इतिहास पढ़ाते थे। डी. ए. वी. कालिज को लालाजीने बहुत दान दिया और घूम २ कर उसके लिए बहुत सा धन एकत्र किया। बहुत से निर्धन विद्यार्थी लालाजीकी सहायता से शिक्षा प्राप्त करते थे। उन्होंने अपने ग्राम जगरांव में भी एक स्कूल खोला हुआ था जिसका सारा व्यय अपने पास से देते थे। कहनेका तात्पर्य यह है कि लालाजी को शिक्षासुधार और उसके प्रचार से बड़ा प्रेम था और

उसके लिए उन्होंने भारी त्याग किया। जपान की शिक्षा प्रणाली का अध्ययन करने की इच्छा से लालाजी जापान गये और वहां से अमरीका। उसी बीच में यूरोपीय महायुद्ध के नगाड़े बज उठे। क्रूर नौकरशाही ने लालाजी का भारत आगमन उस अवसर पर खतरनाक समझा अतः उन्हें भारत में आने देनेसे इंकार कर दिया। अतः विवश होकर लालाजी को ९ वर्ष पुनः निर्वासितावस्था में व्यतीत करने पड़े। अमरीका में रहकर भी लालाजीने एक मिनिट विश्राम नहीं लिया। वे निरंतर अपनी प्यारी मातृभूमि के उद्धार के लिए उद्योग करते रहे।

लालाजी और गोपाल कृष्ण गोखले

लाला लाजपतराय और गोपाल कृष्ण गोखले ने वर्षों तक देश के लिए एकसाथ काम किया है। वे एक दूसरे के सहयोगी थे। लालाजी गर्म विचारों के होते हुए भी महात्मा गोखले के भक्त थे उनको अपार श्रद्धा और प्रेमकी दृष्टि से देखते थे। १९०७ में एक बार जब गोखले लाहौर में व्याख्यान देने के लिए गये तो हजारों की तादाद में लाहौर की जनता ने गोखले का स्वागत किया। उनका अपूर्व जुलूस निकाला गया। लालाजी उस समय गोखले की गाडी खींचरहे थे। गोखले के टाल मटूल करने पर भी लालाजी न माने। उन के इस श्रद्धामय व्यवहार से जनता गद्‌गद् होगई। राजनैतिक विचारों में मत भेद होते हुए भी लालाजी का यह व्यवहार कितना प्रशंसनीय था। सचमुच आतिथ्य सत्कार का यह एक उज्वल उदाहरण था।

दक्षिण अफ्रीका सत्याग्रहकी सहायता

सन १९१३ और १४ में जब दक्षिण अफ्रीका में भारतवासियों के संकट मोचनार्थ महात्मा गांधीने सत्याग्रह संग्राम छेड़ा हुआ था। लालाजीने उस समय पंजाबसे विपुल धन एकत्र करके दक्षिण अफ्रीका प्रवासी भारतवासियों के लिये भेजा। लालाजी का मि. गोखले से बड़ा प्रेम था। दक्षिण अफ्रीका सत्याग्रह के लिये जब गोखले चंदा एकत्र कर रहे थे तो लालाजीने पंजाबसे १० हजार रुपया उन्हें देने का वचन दिया और कहा कि अगर आप स्वयं आवें तो २० हजार रुपया हो सकता है। गोखले अस्वस्थ होने पर भी लाहौर गये। धूमधामसे उनके व्याख्यान हुए और लालाजीने २० हजार के बजाय ४० हजार रुपया एकत्र करके गोखले को दिया। एक मित्र के यह पूछनेपर कि गोखले को बुलाने के लिए आपने इस मौकेपर इतना आग्रह क्यों किया, लालाजीने हंसकर जवाब दिया कि "मि. गोखले को अपने घर पर बुलानेका इससे अच्छा अवसर और कब मिलता"। लालाजी के ऐसे सौजन्यतापूर्ण व्यवहार का उदाहरण उच्च से उच्च आत्माओंमें भी मिलना कठिन हैं।

यूरोपीय महायुद्ध।

सन् १९१४ में जब यूरुप में महायुद्ध छिड़ गया और शक्तिशाली जर्मन ने अंग्रेजों को हराने की पूरी तैयारी करली तो अंग्रेजों को भारतीयों से सहायता की याचना करनी पड़ी। यद्यपि उस समय और उससे पूर्व भी भारतीय अंग्रेजों की शासन नीति से पूर्ण

असंतुष्ट थे मगर भारतीय नेताओं ने इस संकट के अवसर पर अंग्रेजों से असहयोग न किया। भारतीय संस्कृति का सदैव यही पवित्र आदर्श रहा है कि शत्रु को संकट के समय न मारे। अस्तु, भारतीय नेताओंने इस अवसर पर एक स्वर से अंग्रेजों की सहायता करने का निश्चय किया। सुदूर देश अमरीका में अंग्रेज कूट नीतिज्ञों की कृपा से निर्वासित लाला लाजपतरायने भी भारतीयों को यही सलाह दी कि वे इस संकट के अवसर पर अंग्रेजी सरकार की सहायता करें। भारतीयों के लिए यशोलाभ प्राप्तिका इस से अच्छा कोई अवसर न मिलेगा। फलतः भारतीय सिपाहियों ने यूरोपीय रणक्षेत्र में अपनी गर्दनें कटवादीं। आशा थी कि अंग्रेज भारतीयों के कृतज्ञ होंगे लेकिन युद्ध समाप्ति के पश्चात आज तक भारत में जो कुछ हुआ है, वह संसार में अंग्रेजों के कुशासन का खुला प्रदर्शन करता है।

पांचवा अध्याय

अमरीका में ५ वर्ष

अमरीका में लालाजी लगभग ९ वर्ष रहे। सन १९१४ ई० से १९१९ ई० तक अमरीका में रह कर आपने भारतमाता की जो अमूल्य सेवा की वह भारतीयों के हृदय पटल पर हमेशा के लिए अमिट रहेगी। एक अपरिचित देश में बिना पर्याप्त साधनों के इतना

विपुल कार्य कर जाना लालाजी जैसे महारथीकाही पुरुषार्थ था । इस ९ वर्ष की अवधि में आप जापान भी गये लेकिन वहां बहुत थोड़े दिनही रहे। अमरीका में लालाजी ने सब से पहला काम अमरीका प्रवासी भारतीयों को संगठित कर भारत की स्वतंत्रता के लिए आंदोलन करने का किया। मि० हार्डीकर उन दिनों अमरीका में डाक्टरी पढ़ते थे। वे उत्साही और देशभक्त नवयुवक थे। वे वहां के भारतीय विद्यार्थी संघ के अध्यक्ष थे। लालाजी डा. हार्डीकर से मिले और अमरीका में अंग्रेजों के विरोध में आंदोलन करने के विषय में परामर्श किया। सितंबर १९१६ में मि० हार्डीकर, डा॰ केशवदेव शास्त्री तथा अन्य दूसरे भारतीय नवयुवक " शिकागो " में एकत्र हुए और भारत हितरक्षा के लिए अमरीका तथा यूरप में आंदोलन करने का निश्चय हुआ। लालाजी के अनुरोध पर मि. हार्डीकर ने अपना सारा समय उक्त आंदोलन के लिए देना स्वीकार कर लिया। जिस कार्य की ओर दसियों वर्ष लग चुके हों, उसे देश सेवा के निमित्त एक क्षण में त्याग देना देशभक्त डॉ. हर्डीकर जैसेही वी पुरुष का काम था।

इंडियन होमरूल लीग ।

१६ अक्तूबर १९१६ को लालाजीने अमरीका में इंडियन होम रूल लीग की स्थापना की। लालाजी लीग के अध्यक्ष हुए और मि हार्डीकर प्रधान मत्री। इस प्रकार स्वदेश सेवा के लिए अमरीका में भ लालाजी ने सुसंगठित आंदोलन का सूत्र पात कर दिया। लीग क ओरसे एक Young India नामक मासिक पत्र भी निकाला गया

जनवरी १९१७ में " यंग इंडिया " का प्रथमांक प्रकाशित हुआ। यंग इंडिया कार्यालय अमरीका प्रवासी भारतीयों से भारत संबंधी समाचार प्राप्त करने के लिये प्रायः घिरा रहता था। अतः भारतीय समाचार बताने के लिये Indian Information Bureau नामक संस्था अलगही स्थापित करनी पड़ी और उसका कार्य एक दूसरे मंत्री की देखरेख में होने लगा। अमरीका प्रवासी लालाजी के इस सुसंगठित आन्दोलन से बड़े प्रसन्न हुए और उन्हों ने यथाशक्ति इस कार्य में आर्थिक सहायता भी करनी प्रारंभ कर दी। लालाजी स्वयं सारे आंदोलन को चलाते थे। अमरीका प्रवासी भारतीय श्रमजीवियों के कष्टों को वे दयार्द्र होकर सुनते थे। उनके पठन पाठन के लिए लीग की ओर से रात्रि पाठशालाएं खोली गईं। लालाजी स्वयं कई बार इन देशभक्त भारतीय श्रमजीवियों को लिखना पढ़ना सिखाते थे। उन के संगठन के लिए लालाजीने प्रथक रूपसे उनके लिए एक " भारतीय श्रमजीवी संघ " स्थापित किया। अमरीका में उस समय भारतीयों के और भी कई संगठन थे। वे लालाजी के बिचारों और आन्दोलन पद्धति से मतभेद रखते हुए भी लालाजी को भारतका मान्य नेता मानते थे और समय पड़ने पर तनमनधन से उनकी सहायता करते थे।

धनकी कमी

एक अपरिचित देश में और उसपर भी जहां भारतीय हितविरोधी अंग्रेजोंका सुसंगठित रूप में भारत विरोधी आंदोलन जारी हो, इतना बड़ा कार्यभार चलाना मजाक नहीं था। इंडियन होमरूल लीग तथा

मासिक यंग इंडिया पत्र का खर्चा कम नहीं था। लीग के सदस्यों अथवा बेचारे भारतीय श्रमजीवियों से जो सहायता मिलती थी वह इतने बड़े आन्दोलन के लिए भला कैसे पर्याप्त हो सकती थी। इस लिए आर्थिक संकट में फंसकर कभी २ लालाजी को बड़े कष्ट उठाने पड़ते थे। लालाजीने इन कष्टों का कभी अनुभव भी नहीं किया था। मगर वे निराश न हुए। कार्य बराबर जारी रखा। अपने व्यय के लिए वे समाचार पत्रों में लेख लिखते थे और उससे जो कुछ मिलता था उससेही अपना कार्य चलाते थे। उस समय तक अमरीका में लालाजी को बहुत कम लोग जानते थे और उसपर अमरीका में रहने वाले अंग्रेज भारतीयों के विरोधमें खूब आंदोलन करते थे। इस लिए लालाजी के मार्ग में बहुतसी कठिनाइयां आई। समाचार पत्र बड़ी मुश्किल से उनके लेख लेते थे और व्याख्यान प्रबंधक समितियां भी लालाजी से अपरिचित्त होने के कारण उनके व्याख्यानों का प्रबंध नहीं करती थीं। इन कठिनाइयों और परिस्थितीयों में भी निराश न होने वाले बहुत कम मनुष्य होते हैं। लालाजी इन असुविधाओं से जरा भी विचलित न हुए और निर्भीकता पूर्वक कष्ट सहन करते हुए अपना कार्य करते रहे।

सन् १९१६ में लालाजी नें "यंगइंडिया" नामक पुस्तक प्रकाशित की थी। आठ मास में इस पुस्तक का प्रथम संस्करण समाप्त हुआ और धीरे २ जनता में लालाजी की प्रसिद्धि बढ़ने लगी। अप्रेल १९१७ में इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो गया और इस प्रकार अब अमरीकन लोग,

वहां के पत्रकार तथा अधिकारी लालाजी से परिचित होने लगे। अमरीकन समाचार पत्रों ने अब लालाजी के लेख लेने शुरू कर दिये और व्याख्यान प्रबंधक समितियां लालाजी को व्याख्यान देने के लिए निमंत्रित करने लगीं। १९१७ में भारत सरकार ने लालाजी की यह पुस्तक जप्त करली मगर लंडन स्थित भारतीय होमरूल लीगने इसे अपनी ओर प्रकाशित किया। कर्नल वेजवुड ने जो लालाजी के घनिष्ट मित्र और भारतहितैषी हैं, इस की भूमिका लिखी और अपने खर्च से ब्रिटिश पार्लियामेंट के सदस्यों में वितीर्ण की। इस से लालाजी का यूरप में खूब नाम फैल गया। समाचार पत्र लालाजी के लेखों के लिए लालायित रहने लगे। लालाजी रात के १२ बजे तक इन पत्रों के लिए लेख लिखते थे। इस से लालाजी को खूब पैसा मिलने लगा और धीरे २ समस्त अमरीकन जनता लाला लाजपतरायजी से परिचित हो गई।

लोकमान्य द्वारा सहायता

एकबार लालाजी बडे आर्थिक संकट में फंसगये। पैसा पास न होने से जब आंदोलन कार्य भी शिथिल होने लगा तो मि० हार्डीकर ने अपने एक मित्रको एक बार अपने पत्रमें इस संकटापन्न अवस्था का उल्लेख किया। वह सज्जन उस पत्रको लोकमान्य तिलक के पास लेगये। लोकमान्य बड़े चिन्तित हुए और उन्होंने फौरन ही मिसेज ऐनी बीसेन्ट द्वारा ९ हजार डालर भेजे। इस रकम से लालाजी की चिन्ताएं बहुत कुछ दूर होगईं—आंदोलन भी खूब जोर पकड़ गया। इस सहायता का सारा रुपया आंदोलन के ऊपरही खर्च हुआ और १

पैसा भी व्यक्तिगत खर्च में व्यय नहीं किया गया। जब यह सहायता उन्हें प्राप्त हुई तो लालाजी ने मि. हार्डीकर से कहा कि "भारत में लोकमान्य तिलक ही ऐसे नेता हैं जो विदेश में आंदोलन के महत्व और आवश्यकता को समझते हैं। वे देवता हैं और वस्तुतः भारत के वे ही सच्चे नेता हैं।"

अनवरत परिश्रम।

डा. हार्डीकर ३ वर्ष तक लालाजीके साथ अमरीकामें रहे। वे एकही कमरे में रहते थे। उनका कथन है कि लालाजी ने इस ३ वर्ष के समय में कभी जीभरके विश्राम नहीं लिया। वे निरंतर परिश्रम करते रहे। प्रातःकाल उठने के उपरान्त रात के १२ बजे तक लालाजी कार्य करते थे। वे स्वयं अपना सब कार्य करते थे। अमरीका में रहकर लालाजी ने सैंकड़ों नहीं हजारों पुस्तकें देख डालीं। अनेकों विषयों का ज्ञान प्राप्त किया। स्वाध्याय का उन्हें शुरू सेही शौक रहा है इस लिए अमरीका में भी वे कभी खाली नहीं बैठे। उन्हें हमेशा या तो पढते हुए देखा गया या लिखते हुए। भारतीय होमरूल लीग का कार्य संचालन, यंग इंडिया पत्र का संपादन, समाचार पत्रों के लिए लेख लेखन और विशाल स्वाध्याय के अतिरिक्त भी वे समय २ पर पुस्तकें ट्रेक्ट और पेम्फलेट लिखा करते थे।

वे भारतीय पत्रों को अवश्य पढते थे तथा अंग्रेजी राजनैतिक प्रगति का हमेशा अध्ययन करते थे। अमरीकन राजनीति के अध्ययन के लिए भी वे बहुत से अमरीकन समाचार पत्र पढ़ते थे। यों

तो हमेशा ही रातके ११।१२ बजे तक उनका स्वाध्याय चलता था लेकिन कभी २ दो २ बज जाते थे। इस प्रकार लालाजी अमेरीका में स्वदेश सेवा और राजनैतिक ज्ञानवृद्धि के लिए अपने अमूल्य समय का एक मिनिट भी नष्ट नहीं करते थे।

उनकी पुस्तकें

अमरीकामें रहकर उन्होंने जितना गंभीर और विशाल अध्ययन किया उस से कहीं अधिक उन्हों ने पुस्तक लेखने से भारत की बड़ी भारी सेवा भी की। उनकी पुस्तकें बड़ी गंभीर और बहुमूल्य समझी जाती थीं और उनका संसार के राजनीतिज्ञों पर बड़ा प्रभाव पड़ता था। यंग इंडिया पुस्तक के पश्चात् उन्हों ने अंग्रेज़ी में England's Debt to India नामक पुस्तक प्रकाशित की। जिसने लालाजी की ख्याति और भी बढ़ाई। उन के लेख और पुस्तकें तथा उनके व्याख्यान यूरुप और अमरीका में प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखे जाने लगे।

लालाजीने एक बार सुना कि भारतवर्षने यूरोपीय महायुद्ध की सहायतार्थ ब्रिटेन को डेढ़ करोड़ रुपया सहायतार्थ दिया है तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ और उसी समय इंग्लेंड के प्रधान मंत्री मि. लायड जार्ज के नाम खुला पत्र लिखने बैठ गये और उसे समाप्त करके ही उठे। यह पत्र उस समय अमरीका और यूरोप के पत्रों में प्रकाशित हुआ और पीछे पुस्तक रूपमें उसे छपाया गया। उसके पश्चात इसी प्रकार का एक खुला पत्र लालाजीने मि. माण्टेगू के नाम भी लिखा। यह पत्र भी समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ। इस लेखन कार्य के

अतिरिक्त लालाजीने और भी कई छोटे २ ट्रेक्ट लिखे। जिन में से "The fight for crumbs", "A call to yong India", Self determination for India आदि विशेषोल्लेखनीय हैं। यह कार्य प्रायः १९१८ में ही हुआ। लालाजी उस समय The political future of India नामक नवीन पुस्तक के लिए सामग्री जुटा रहे थे और यह पुस्तक १९१९ में प्रकाशित हुई।

एक बार संयुक्त राष्ट्र अमरीका की वैदेशिक संबंध समिति छोटे पराराष्ट्रों तथा दुखी देशों के स्वत्वो के विषय में विचार कर रही थी उस समय भी लालाजीने एक वक्तव्य छपाकर स्वयं उक्त समिति के समक्ष उपस्थित किया। लालाजी तत्वज्ञानी थे। संसार में क्या हो रहा है इसका उन्हें पूर्ण ज्ञान रहता था। कहां से किस प्रकार की सामग्री उपलब्ध हो सकती है इसका लालाजी को खूब अनुभव था। उन्हीं दिनों में लालाजी ने एक "India a grave yard" (भारत-एक स्मशान भूमि) शीर्षक सरकूलर प्रकाशित किया। इस सरकूलर ने संसार भर में प्रसिद्धि प्राप्त की इटली, स्पेनिश, जर्मन, रशियन, फ्रेंच, परशियन और भारतकी प्रायः सब ही भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ। इस सरकूलर लालाजी का नाम संसार के कौने २ में रोशन कर दिया। इस शक नहीं कि लालाजीने देश से बाहर रहकर भी स्वदेश की सेवा की वह सदा सूर्य चन्द्र समान अविचल बनी रहेगी।

एक प्रधान विशेषता।

यों तो लालाजी में अनेकों विशेषताएं थीं लेकिन उनमें स

बड़ी विशेषता यह थी कि वे स्वकर्तव्यपालन में कभी आलस्य न करते थे। अमरीका में तीन २ चार २ असिस्टेण्ट रहते हुए वे सारा कार्य स्वयं करते थे। वे अपने कार्य को दूसरों पर बहुत क छोड़ते थे। सचमुच इस विशेषताने आपको संसार विख्यात ब में भारी सहायता की। भारतीय युवकों को चाहिये कि वे लाल के चरित्र का अनुकरण करें। उनकी भांति स्वदेश सेवा व्रत धार स्वजीवन सफल बनावें।

आन्दोलन का फल।

अमरीका में रहकर लालाजी और उनके साथियोंने स्वदेश हि रक्षा के लिए जो आन्दोलन किया उससे संसार के समक्ष भारत वास्तविक स्थिति प्रकट होगई। लोग विदेशमें आंदोलन के महत्व समझ गये। यों तो यूरोपीय महायुद्ध से पूर्व अनेकों विद्वान भारती नेता इन पाश्चात्य देशोंमें आये लेकिन उन्होंने भारत के विषय राजनैतिक आंदोलन करने की आवश्यकता कभी भी अनुभव नहीं की। लालाजी पहले ही व्यक्ति थे जिन्होंने विदेशों में रहकर स्वदेश लिए नाना प्रकार के कष्ट सहन कर के भी इतना सुन्दर और सुव्यस्थि आंदोलन कर दिखाया।

यूरोपीय महायुद्ध समाप्त होनेके उपरान्त लालाजी के लिए भार जाने के विषय में कोई रुकावट न रही और वे सन १९१९ क अन्तमें अमरीकासे चलकर २० फरवरी १९२० को बंबई पहुचे। अमरीका में आपने काफी ख्याति प्राप्त करली थी। अतः २८ नवंब १९१९ को न्यूयार्क में आपको विदा-भोज दिया गया। उस समय

पने अपने सहयोगियों साथियों और अमरीका निवासियों का आभार
नते हुए अंग्रेजी सरकार को लक्ष करते हुए कहा था कि:—

" मै खून खराबीसे घृणा करता हूं। व्यक्तिगत रूपसे में अंग्रेजों
आदर्शों का कायल हूं—उनका सम्मान करता हूं। उनमेंसे अनेक
मित्र हैं। अपने विषय में मै यही कह सकता हूं कि यदि
टिश साम्राज्य के अन्तर्गत कैनेडा और दक्षिण अफ्रीका के समानहीं
रत को अधिकार प्राप्त हो जांय तो मैं संतुष्ट हो जाऊंगा। "

खेद है कि नौकरशाही भारतीयों की इतनी तुच्छ अभिलाषाओं
भी पूर्ण करने की इच्छा नहीं रखती। लालाजी के उक्त विचार
ज से ८ वर्ष पूर्व के हैं। उसके पश्चात् लालाजी की धारणा ऐसी
हीं थी। भारतीय व्यवस्थापक सभा के गत शिमलाधिवेशन में तो
लाजी ने Public Safety Bill का विरोध करते हुए स्पष्ट रूपेण
दूघोषित किया था कि मैं एक क्षणमें भारतसे अंग्रेजों का विदा होना
खना चाहता हूं और इसमें कोई शक नहीं कि जब तक
अंग्रेजों के सब्ज कदम इस भारतभूमि पर बिल्ली के नाखूनों की
रह गड़े रहेंगे तब तक भारत कदापि सुखी न रह सकेगा।

छठा अध्याय

मातृभूमि में

२० फरवरी १९२० को वह वीर तपस्वी ५ वर्ष के लम्बे निर्वा-
न के पश्चात् पुन. अपनी मातृभूमि को लौटा। अहा, अपनी प्यारी

मातृभूमि कैसी प्यारी होती है। ऐसा कौन अभागा मनुष्य है
अपनी मातृभूमि को लौटने से प्रसन्न न हो। ९ वर्ष के लंबे प्रव
से अपनी जन्मभूमि को लौटनेपर लालाजी को बड़ी प्रसन्नता हु
बंबई में जहाज से उतरते ही आपका बड़ी धूमधाम से स्वागत कि
गया। स्वदेशभूमि पर पदार्पण करते ही आपने सब से पहले यदि व
संदेश दिया तो वह युवकों के लिए था। युवक देश की आश
लता होते है। अतः लालाजी इन्हीं आशालताओं को सींचकर
स्वदेशोद्यान को हराभरा और सुगंधिमय बनाना चाहते थे। उन्हं
आते ही भारतके नौजवानों को स्वदेश भक्ति, सदाचार, सुसंग
और हिन्दू मुस्लिम ऐक्य का सदुपदेश दिया।

पंजाब हत्याकांड।

जालिम ओडायर की काली करतूतों और निहत्थे भारतीयों
जालियान वाले बागमें खून होने का समाचार तो लालाजी को मि
ही गया था। इस हृदय विदारक घटनाने लालाजी के हृदय
बड़ी सख्त चोट पहुंचाई। सरकार के विषय में उनके विचार अ
और भी खराब हो गये। कहां वे सरकार के साथ मिलकर स्वदेश
न्नति के लिए प्रयत्न करने को तैयार थे और कहां वे इस नरहत्
कांडसे एक दम असहयोगी बन गये। लालाजी ने पंजाब हत्
कांडकी स्वयं जांचकी और सरकार को पूर्ण अपराधी पाया। उ
सरकारने उक्त हत्याकांडकी जांचके लिए हंटर कमेटी बिठाई थी
उसने ओडायर के उक्त पाप कर्म का समर्थन किया। लालाजी
इस घटना से सरकार पर से विश्वास हटगया। १९२०

पों दिनों कौंसिल निर्वाचन थे। लालाजी के लिए भी लोगोंने नों आग्रह किया। कई सरकार परस्त मित्रों ने मि० माण्टेगू सफोर्ड स्कीम के अनुसार प्राप्त सुधारों का उपयोग करने का लालच दिया। मगर लालाजी विचलित न हुए। उन्होंने साफ २ कह था कि "यह सब व्यर्थ है। सर माईकेल ओडायर के पाप कर्म दि जो सरकार उचित मानलेती है उसके साथ सहयोग करके की कुछ भलाई करना महा कठिन है। सरकार के जिन अफसरों पंजाबी जनता की बेइज्जती की है; स्त्रियों के घूंघट उघड़वाने की ण्डताकी है वे सब के सब अपने २ पदों पर प्रतिष्ठित हैं। ड़ी अवस्था में उनके साथ रहकर कोई कार्य करना उनके पापकार्य समर्थन करना है। जब तक अंग्रेज हमें अपनी प्रजा समझते हैं ल तक हमारा उनका एक साथ मिलकर कार्य करना बड़ा कठिन इस लिए मै कौंसिलोंमें जाकर देशकी सेवा करने की चर्चा को र्गल प्रलाप समझता हूं और इसलिए बाहर रहकरही देशसेवा ना चाहता हूं।" यह शब्द उस समय के है जब महात्मा गांधी आंदोलन शुरूही हुआ था। लालाजी के इन दृढ़ विचारों से त्माजी के असहयोग आन्दोलन को भारी पुष्टि मिली।

राष्ट्रीय महासभा के अध्यक्ष

एक ओर तो क्रूर नौकरशाही की उद्दण्ड नीति और जलियान वा बाग जैसे नारकीय हत्याकांड देश में हो रहे थे। दूसरी ओर कार से सहयोग करने या न करने तथा खिलाफत का प्रश्न देश समक्ष उपस्थित होगया। इन सब जटिल समस्याओं पर विचार

कर एक नीति निर्धारित करने के लिए राष्ट्रीय महासभा का एक विशेष अधिवेशन कलकत्ते में करने का निश्चय हुआ। हमारे चरित्र-नायक लाला लाजपतरायजी को देशने एक स्वर से इस कठिन परिस्थिति में अपना नेता बनाया। कलकत्ता विशेष कांग्रेस लालाजी की अध्यक्षता में बड़े-धूमधाम से हुई। महात्मा गांधी का असहयोग आन्दोलन विषयक प्रस्ताव बहुमत से स्वीकृत हुआ। लालाजीने इस बिकट परिस्थिति में बड़ी सुयोग्यता से उक्त अधिवेशन का कार्य संचालन किया। लाला यद्यपि स्वयं पहले ही असहयोग संबंधी विचार देशके समक्ष रखचुके थे लेकिन इस अवसर पर आपने इस विषय में कोई सम्मति प्रकट न करके सभा पर ही सारा भार छोड़ दिया था प्रस्ताव जब पास होगया और अधिवेशन समाप्त होगया तो आपने उक्त प्रस्तावानुसार असहयोग नीतिके विषयमें घोर आंदोलन करना प्रारंभ किया। अल्प समय में ही पंजाबको आपने असहयोग आन्दोलन के पक्ष में कर दिया।

फिर गिरफतारी

नागपुर कांग्रेस में असहयोग का प्रस्ताव फिर उपस्थित हुआ और बहुमत से प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। कांग्रेस से लोग अपने २ घर लौटे और एक ओरसे दूसरे छोर तक असहयोग आंदोलन की धूम मच गई। *सरकारी दफ्तरों में सन्नाटा छागया, कालिज और स्कूल फाड़ खाने* को आने लगे। कचहरियों में वकीलों की सफाई होगई। गरज सबने सरकार से असहयोग कर लिया। सरकार की नाक में दम होगया। वह झल्ला उठी और दमन चक्र घुमाना शुरू किया। घर पकड़ शुरु

हुई। जेलखाने भर गये। पंजाब के शेर लालाजी पर तो नौकरशाही की कुदृष्टि थी ही। झठ एक प्राइवेट सभा को सार्वजनिक बताकर उन्हें उनके सहयोगियों सहित गिरफतार कर लिया। यों तो नागपुर कांग्रेस में महात्माजी के असहयोग नीतिसंबंधी प्रस्ताव पर दिये हुवे लालाजी के भाषण से सरकार जली बैठी थी क्यों कि उन्होंने उस समय स्पष्ट कर दिया था कि "हमें वृटिश सरकार में विश्वास नहीं है" लेकिन उस समय की कसक उसने ३ दिसंबर १९२२ को निकाली। उस दिन लाहौर में कांग्रेस कमेटी की सभा थी और केवल कांग्रेस के सदस्य ही निमंत्रित थे। चपरासी और क्लर्क तक को वहां से हटा दिया गया था। इस लिए किसी भी दशा में वह सभा सार्वजनिक नहीं थी, जो सार्वजनिक सभाबंदी के हुक्मसे नाजायज ठहरती। परन्तु जहां सरकार जनता के स्वतंत्र भावों को हर प्रकार कुचलने को तैयार बैठी हो वहां न्याय और नियम की बात व्यर्थ है। सीनियर पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट के साथ मेजर फेरार वहां पहुंचे और बोले कि यह सभा सार्वजनिक है इसे अभी बन्द करो। लालाजी इस नादिरशाई हुक्म को न सह सके और फौरन उत्तर दिया कि इस सभा के अध्यक्षकी हैसियत से मैं कहता हूं कि यह सभा सार्वजनिक नहीं है और मैं इसे कभी भंग नहीं कर सकता।

पुलिस अधिकारी तो यह उत्तर चाहतेही थे। झट साथियों सहित गिरफतार कर लिया। यह वह पवित्र समय था जब कि देशके वीर नवयुवक हंसते २ स्वदेश सेवा के लिये जेलयात्रा कर रहे थे। बंगाल और यू. पी. में जेलें असहयोगियों से भरी पड़ी थीं। ऐसी

अवस्थामें जब कि साधारण स्वयंसेवक जेल जा रहे हों, वहां लालाजी जैसे नरकेशरी को नौकरशाही भला किस प्रकार स्वतंत्र छोड़ सकती थी। महात्माजी की इच्छा थी कि लालाजी अपने को गिरफतार होने से बचावें। लेकिन परिस्थिति ही ऐसी थी कि लालाजी के लिए इससे अच्छा कोई और मार्गही न था। उन्हों ने गिरफतार होनेसे पूर्वही महात्माजी को जो पत्र लिखा था उसमें स्पष्ट कर दिया था कि इस समय जैसी परिस्थिति आपड़ी है उस में मेरा गिरफतार होना आवश्यक है। आप और डा. सन्तानम पर सेडीशस मीटिंग ऐक्ट की छठी धारा लगाई गई। उसके अनुसार इन दोनों को ५००।५०० रुपया जुर्माना तथा ६।६ मास की कैद की सजा दी गई। इसके अतिरिक्त ताजीरात हिन्द की १४५ धारा कें अनुसार आप लोगों को १।१ वर्ष की और भी कड़ी सजा देकर मजिस्ट्रेट ने अपनी न्यायप्रियता का खूब परिचय दिया।

असहयोग आन्दोलन में लालाजी ने पंजाब में बड़ा कार्य किया। आपने एक स्वतंत्र राष्ट्रीय शिक्षण संस्था की आवश्यकता अनुभव करके "तिलक राष्ट्रीय विद्यालय" खोला। इस विद्यालयको आपने अपना ४० हजार का पुंस्तकालय और १३ लाख का मकान दे दिया। इस के अतिरिक्त राष्ट्रीय कार्यकर्ता तैयार करने तथा सुव्यस्थित रूपसे कार्य करने के लिए आपने Servants of the People Society खोली। लालाजी मनुष्य मात्रकी सेवा करना स्वधर्म समझते थे। इसी लिए आपने अपने क्षेत्र को केवल भारत तक ही सीमित न रखनेकी इच्छासे अपनी संस्थापित समिति का नाम "जन सेवक समिति" रखा।

असहयोग आंदोलन में गिरफतार होने के समय आपने देशवा सियों के नाम अपना एक संदेश भी प्रकाशित कराया। उसमें आप लिखा था कि " मैं अमरीका से चलते समय खुद सोचता था कि बहुत थोड़े समय तक ही जेल से बाहर रह सकूंगा। मैं अप गिरफतारी पर बहुत खुश हूं क्यों कि हमारा ध्येय पवित्र है। हम जो कुछ किया वह अपनी आत्मा एवं परमात्मा की इच्छानुकूल किया है। हमारा मार्ग ठीक है इस लिए मुझे विश्वास है कि ह अपनी उद्देश्य सिद्धि में अवश्य सफलता मिलेगी। मुझे यह भी यकी है कि मै बहुत जल्द वापिस आकर आप की खिदमत। करूंगा लेवि अगर ऐसा न भी हो तो भी मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि मु निहायत खुशी है कि खुद मैं अपने परमात्मा के सामने हाजिर जाऊंगा। मैं एक निहायत कमजोर इंसान हूं। मेरे अन्दर महात गांधी जैसी पाकीजगी नहीं है। मैं बाजे वक्त अपने गुस्से को क नहीं ला सकता। मै यह भी नहीं कह सकता कि मेरे दिल कोई ख्वाहिश काम नहीं करती। अलबता यह मैं कह सकता कि मैंने अपने मुल्क और अपनी कौम की खिदमत को हमेशा अप विवेक और अपनी आंखों के सामने रखा है और जो कुछ किया वह उसी धुन में किया है। मैं जानता हूं कि मैंने कर्तव्य पाल करने में बहुतसी गलतियां की हैं और हरदफा अपने बाज देशवासि पर दिल दुखानेवाली नुक्ताचीनी की है। मैं उन सबसे माफी मांग हूं। वे मुझे अपने सच्चे दिलसे मांफ करदें और खासकर-मुझे माडरेट भाई और आर्यसमाजी भाई माफ करें।

हमारे बहुतसे देशवासी भाई जालिम पेट की खातिर सरकार की नौकरी करते हैं, बहुतसे काम उन्हें इच्छा न होते हुए भी पेट की खातिर करने पड़ते हैं। उन की हालत बडी खराब। मैं चाहता हूं कि इन भाइयों की ओर आप नफरत की निगाह से न देखें। हमारे आन्दोलन की सफलता के लिए जरूरी है कि—

(१) सब धर्म के लोगों में इस समय पूरा मेल रहे और किसी प्रकार भी आपस में फूट न होवे।

(२) मुल्क में उपद्रव न हो। सरकार के हिमायती इस समय चाहते हैं कि हम उपद्रव पर तुल जांय लेकिन बहादुरी और देशप्रेम यह चाहता है कि भड़काये जाने पर भी हम शांत रहें। इस समय खानाजंगीका सख्त अन्देशा हैं। खानाजंगी, खाना बर्बादी है। इस लिये मैं निहायत सदाकत और अदब से अपने देश वासियों से निवेदन करता हूं कि वे अपने मिजाज पर कबजा रखें। गिरफतारियों पर किसी किस्मकी हड़ताल न करें, न सभा करें न अदालतों में जावें। हर शख्स शांतिपूर्वक काम किये जाय। कांग्रेस की नाफरमानी न करके अपने देश और प्रदेश के नेताओं की हिदायत पर काम करना अपना फर्ज समझें। शांति रखना, शांत रहना और अहिंसात्मक असहयोग का पालन करना हमारी सफलता के लिये बहुत आवश्यक है।

(३) कांग्रेस के काम में किसी किस्मका खलल न हो, खद्दर प्रचार बढता जाय, युवराज के आगमन में किसी प्रकार का

आनंद न मनाया जाय, कोई जलसों में साथ न दे और महात्माजी के
ख्वाहिश के मुताबिक काम किया जाय।

पंजाब के नौजवानो! एक लफ्ज मैं तुम से कहना चाहता हूं
और वह यह कि महज इम्तिहान पास करना तुम्हारी जिन्दगी का
अंत नहीं है। जो शख्स जातीय इज्जत और आत्म सम्मान के खयाल
में बंधा हुआ है वह इंसान नहीं हैवान है। अगर हैवानी के आलम
में अच्छे विचार को दबाकर हमने ऐशोआराम की जिन्दगी बिता
डाली तो वह जिन्दगी भी हमारे लिए मौत से बदतर हो जावेगी।
मै हरगिज नहीं चाहता कि तुम बेजा जोश से काम लो, लेकिन
खूबी के वास्ते कम से कम दो बातें तो जरूर करो—खद्दर पहनो
और शाहजादे का बायकाट करो।

पंजाब की देवियों! मुझे मालूम है कि तुम्हारे अंदर भी
कौमकी खिदमत का जोश मौजूद है और तुम कौमकी खिदमत
गुजारी में अपनी आजादी की पर्वाह नहीं करती। तुममें से कई नेक
भाव कैद होने के लिए तैयार हैं मगर अंग्रेजी जेलखाने शैतानी
जागीर हैं। यहां बदमाशी और बदकारी का जोर है। इस लिए तुम
इस खयालको अपने दिलमे दूर करदो और शुद्ध स्वदेशी के प्रचार
और शुद्ध स्वदेशी के इस्तेमाल से अपने आपको पवित्र करो। तुम
यह भी कर सकती हो कि हमारे जो भाई नन्हे २ बालक छोड़कर
जेलखाने गंदे, सुस्त, उदास और दलिद्री में उन बालकों
हिफाजत करो।

देशवासियों! लो, अब मैं विदा होता हूं। मैं इस भरोसे और द

ादसे जाता हूं कि मेरे प्यारे मुल्क और मेरी प्यारी कौम की ज्जत तुम्हारे हाथ है। वन्देमातरम और तिलक राजनीति स्कूल ये ोनों हमारे बच्चे हैं। उनको भी तुम्हारे सुपुर्द करता हूं। जो भाई भाज लाहौर में होते हुवे भी सभामें नहीं आते, उनको मैने खुद बाहर हने की दरखास्तकी थी, जिसमें हमारा काम जारी रहे।

तुम्हारा प्रेमी—

लाजपतराय

लालाजी जेलमें अवश्य चले गये किन्तु उन का उक्त संदेश और उनकी पवित्र सेवाएं जनता के हृदय मंदिर में बस गईं। जेलभी इस ाहान नेता के आगमन से गूंज उठी। ऐसे महापुरुषों से कैदखानों ी भी इज्जत बढ़ जाती है।

बंद होता था जहां ये शेरे नर पंजाबका।
आब्रू जाती थी बढ़ उस जेलकी दीवार की॥

वास्तवमें यही बातथी। लालाजी के जेल जाने पर पंजाब में एक ासे आग लग गई। देशभक्तों का खून उबल पडा और नौजवान ठ खड़े हुए। पंजाब की देवियों ने भी अपने नेता के संदेश को ीकार किया और स्वदेशी आन्दोलन में पूर्ण भाग लेकर स्वकर्तव्य

सप्तम अध्याय।

असहयोग आन्दोलन के बाद।

जेल से आनेके बाद लालाजी अस्वस्थ रहे। जेल में ही उन्हें क्षयरोग की शिकायत प्रारंभ होगई थी। असहयोग आन्दोलन को चौराचौरी कांड के कारण महात्माजीने स्थगित कर दिया था। दो वर्ष पूर्व के कट्टर असहयोगी, सामने कोई रचनात्मक कार्यक्रम न रहने से कौंसिलो में घुसकर ही सरकार की शक्ति नष्ट करना चाहते थे। उधर खिलाफत के मसले के बाद मुसलमान अपने असहयोग आन्दोलन के जोश को तबलीग व तंजीम में लगाने लगे। हिन्दुओंके खिलाफ मुस्लिम जाति में अविश्वास और विद्रोह फैलने लगा। मालाबार में मोपाला मुसलमानोंने हजारों निरपराध और निहत्थे हिन्दुओं को लूटा, कतल किया और स्त्रियों की बेइज्जती की—उन्हें जबरदस्ती मुसल्मान बनालिया। इसी प्रकार मुलतान अमृतसर और सहारनपुर तथा उसके बाद कोहाट में भी धर्मके नाम पर मुसल्मानों ने निरपराध हिन्दुओं का खून बहाया, उन्हें लूटा और बेरहमी से पीटा। इन घटनाओं से हिन्दू क्षुब्ध हो उठे। उन्हें भी अपनी रक्षा के लिए अपना संगठन करने की फिकर पड़ी। परलोकगत स्वामी श्रद्धानंद महामना मालवीयजी आदि राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं को विवश होकर अपनी शक्ति राष्ट्रीय क्षेत्रसे हटाकर हिन्दू संगठन की ओर लगानी पड़ी। अत्याचारी मोपलाओं द्वारा मुसलमान

हुवे हजारों हिन्दुओं को स्वामी श्रद्धानंदजी महाराजने शुद्ध करके पुनः हिन्दू बना लिया।

हिन्दुओं के इस न्यायोचित अधिकार से मुसलमान और भड़के। उन्होंने अब मस्जिदों के सामने बाजा न बजाने का अड़ंगा खड़ा किया। इस बाजे के प्रश्नपर हिन्दू मुसलमानों के आपस में और बुरे भाव हो गये। सारे देश में हिन्दू मुस्लिम विद्रोह की अग्नि भड़क उठी। सर्वस्व त्यागी महानात्मा स्वर्गीय चित्तरंजन दास ने बंगाल में हिन्दु मुस्लिम विद्वेष शांति के लिए मुस्लमानों के साथ समझौता किया। यों तो लखनऊ पैक्टसेही देश में विद्रोह फैल गया था। मगर इस बंगाल पैक्टने और भी गजब ढाया। बंगाल के हिन्दुओं के लिए यह पैक्ट बड़ा महंगा पड़ा।

लाला लाजपतरायजी की इच्छा थी कि कुछ वर्षों तक एकान्त सेवन करके स्वास्थ सुधारलें लेकिन देश की यह दुर्दशा देख कर उनसे चुपचाप न बैठा गया। उन्होंने हिन्दू मुस्लिम समस्या का बड़ा गंभीर अध्ययन किया था। वे यह जानते थे और बराबर यही कहते थे कि हिन्दू मुस्लिम ऐक्य बिना न तो स्वराज्यही मिल सकता है और न देश में सुख शांतिही हो सकती है। लेकिन वे अन्याय के समर्थक नहीं थे। हिन्दू मुस्लिम ऐक्य को वे पवित्र दृष्टि से देखते थे लेकिन वे मुसलमानों को खुश करने के लिए हिन्दू हितों को कभी बलिदान करने के लिये तैयार न थे। इसलिए उन्होंने विवश होकर सबसे पहले बंगाल पैक्ट का विरोध किया और फिर महामना मालवीयजी तथा परलोकगत स्वामी श्रद्धानंदजी के साथ मिलकर हिन्दू संगठन के

आंदोलन में सहयोग दिया। कोहाट हत्याकांड पीड़ित सहस्रों हिंदुओं की दुर्दशा देखकर लालाजी का दयार्द्र हृदय और भी विव्हल हो गया। हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के कट्टर पक्षपाती महात्मा गाधी तक को इसके लिए २१ दिनका उपवास करना पड़ा था। हिन्दू मुसलमानों के मेलकी जी जान से चेष्टा हुई, मगर व्यर्थ गई।

लालाजीने अब अपनी सारी शक्ति हिन्दू संगठन और दलितोद्धार में लगा दी। लालाजी के इस सहयोग से हिन्दुओं में नवजीवन का संचार होने लगा। उनकी महासभा सुसंगठित होगई। काशी और उसके बाद प्रयाग में हिन्दू महासभा के बड़े शानदार अधिवेशन हुए। उधर मलकानों की शुद्धि की धूम मच गई। लाखों बिछुड़े हुए भाई हिन्दू धर्म में पुनः दीक्षित किये गये।

सन १९२५ में आपने कलकत्ता हिन्दू महासभा का अध्यक्ष पद सुशोभित किया। आपने बडी गंभीर स्थिति में हिन्दुओं को सन्मार्ग दिखाया। सारी शक्ति हिन्दू संगठन की ओर झुका देने पर भी लालाजी देशहित को न भूल सके। हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के लिए उन्होंने हमेशा सहयोग का हाथ बढाये रखा। मुसल्मानी नेताओं की तरह अपनी जाति का कार्य हाथ में लेकर वे अपने मुख्य ध्येय "स्वराज्य प्राप्ति" को एक क्षण भी न भूले और यह आपही का पर पुरुषार्थ है कि हिन्दू महासभा सांप्रदायिक संस्था होते हुए, सदैव राष्ट्रहित पोषिका बनी रही। सांप्रदायिकता के रंग में रंगे हुए कुछ हिन्दू सभावादी महासभा की इस नीति से असंतुष्ट भी थे। ऐसे लोगों के समाधान के लिये लालाजी ने १९२५ में कलकत्ता हिन्दू

महासभा के अपने भाषण में स्पष्टोल्लेख कर दिया। आपने कहा कि ' हिन्दू नेताओं ने स्वराज्य के आंदोलन को विकसित रूप देने के लिए अबतक जो कुछ किया है उस पर मुझे तनिक भी दुःख नहीं है। मुझे आशा है कि भावी इतिहासकार उन नेताओं की ऐसी आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रशंसाही करेंगे। हमें यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए की कोई भी जीवित राष्ट्र राजनीति की उपेक्षा नहीं कर सकता। राजनीति संघटित जीवन का प्राण है और सामाजिक उन्नति और राष्ट्रीय समृद्धि के लिए उचित ढंगकी राजनीति के कार्यकलाप नितान्त आवश्यक हैं। राजनीति के कार्यकलाप दो प्रकार के हैं—सरकार विरोधी और सरकार के पक्ष में। केवल विरोध करने के उद्देश से सरकार का विरोध करना मूखता होगी। साथही व्यक्तिगत या जातिगत हितों के लिए सरकार की सहायता करनाभी कम मूर्खता न होगी। अब तक हिन्दुओं ने राष्ट्रीय नीति बर्ती है और मैं समझता हूं उन्हें इस नीति पर दृढ रहना चाहिये। यदि वे राष्ट्रीयता का स्थान सांप्रदायिकता को देंगे तो उन के लिए इससे बड़े कलंक की दूसरी बात न होगी। ”

हिन्दू मुस्लिम ऐक्य और सांप्रदायिक निर्वाचन के संबंध में आपने अपने उक्त भाषण में कहा था कि—

“ पर हम इस बात की ओर से भी आंखें बन्द किये नहीं रह सकते कि भारत में कुछ ऐसी जातियां हैं जो हमारी राष्ट्रीयता से अनुचित लाभ उठाना चाहती हैं और जो अपनी सांप्रदायिकता को इतना उग्ररूप दे रही हैं कि वह सारे देश के हित के लिए विघातक और

हिन्दू जाति के लिए पूर्णतया विनाशकारी प्रतीत होती है। हमारा कर्तव्य है कि हम ऐसी सांप्रदायिकता का विरोध करें, अन्यथा, हमारी समझ में, इसका अंतिम परिणाम स्थायी दासत्व, स्थायी विग्रह और स्थायी अधीनताकी स्थिति होगा।

जहा तक राजनीति का संबंध है, हिन्दू महासभा का कार्य इसके सिवाय और कुछ नहीं है कि वह अपनी जाति के साथ और जातियों के संबंध का स्पष्टीकरण कर दे। इस दृष्टि से हिन्दू जाति किसी भी प्रकार के साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व की विरोधिनी है। लोकमत का भार इस ओर अधिक दिखाई देता है कि लखनऊ पैक्ट एक भूल थी, पर यह कहना ठीक नहीं है, जैसा कि मि० एम. ए. जिन्ना ने हाल ही में अलीगढ में कहा था कि हिन्दू लखनऊ पैक्ट का नया संस्करण या उसपर फिर विचार करने के बिल्कुल विरुद्ध हैं। दिल्ली की वार्तालाप में हिन्दू प्रतिनिधियों की स्थिति यह थी कि वे प्रतिधित्व की ऐसी किसी भी सार्वजनिक योजना को मान लेंगे जो समस्त भारत के लिए लागू हो, पर उसमें इस बात का विचार होना चाहिये कि सब दशाओं में निर्वाचन प्रथा सम्मिलित रहेगी और, सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व व्यवस्थापिका सभा के बाहर विस्तृत नहीं किया जायगा। इतना होते हुवे भी यह कहना कि हिन्दू समझौते के लिए तैयार नहीं है, ठीक नहीं है। मेरी समझ में हिन्दू मुसलमानों का समझौता असंभव नहीं है, पर यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये कि किसी तरह का समझौता करने के लिये हिन्दू किसी प्रकारके दबाव के आगे सिर झुकाने को कभी तैयार न होंगे। दंगों और

अशांतियोंकी संख्या चाहे जितनी बढ़ती जाय वे उस बात पर कभी राजी न होंगे जिसे वे न्याय युक्त और उचित न समझते हों।"

सन १९२५ के प्रारंभ में दिल्ली में, जो वृहद ऐक्य सम्मेलन हुआ था उसमें भी लालाजी ने यही विचार प्रकट किये थे। उन्हों ने स्पष्ट रूपसे घोषित कर दिया था कि "सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व राष्ट्रीयता के बिलकुल विरुद्ध है और इससे देश छोटे २ विभागों में विभाजित हो रहा है। यदि सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व को अधिक व्यावहारिक रूप दिया जाय तो पता नहीं कितने भेद और उपभेद स्थापित हो जांयगे। मै आपसे अनुरोध करता हूं कि आप इस समस्यापर विचार करें, हिन्दू मुस्लिम हितों की दृष्टि से नहीं, बल्कि एक राष्ट्र की हैसियत से जिसे उन वर्गों का सामना करने, के लिए संगठित हो जाना चाहिये जो हमें स्वराज्य नहीं देना चाहते। यदि कोई ऐसा उपाय हमारे सामने रखा जायगा जो हमारे देशकी उन्नति करनेवाला हो, तो मै उसका हृदयसे समर्थन करूंगा। पर आपको याद रखना चाहिये कि कि हमें स्वराज्य केवल लेना ही नहीं है; उसकी रक्षाभी करनी है। प्रतिनिधित्व की संस्थाओं में कुछ परिवर्तन परिवर्द्धन करके बनावटी समझौता करने का फल कुछ अच्छा न होगा। हमें तुच्छसी बातों पर लड़ न मरना चाहिये बल्कि एक ऐसी योजना बनानी चाहिये जो स्वराज्य प्राप्ति में सहायक हो और देशमें एकता स्थापित करे।"

लालाजी के उपरोक्त विचारों का पाठक मनन करें और देखे कि कैसे कल्याणकारी वचन है। लालाजी ने अन्त समय तक इसी नीति

का पालन किया। आपने हिन्दू महासभाको सांप्रदायिकता के भीषण पापसे बचाया। फलतः १९२९ में दिल्ली महासभा को निश्चय करना पड़ा कि हिन्दू महासभा अपनी ओरसे उम्मेदवार न खड़े करे। हां, यदि इस बातकी आशंका हो कि अमुक उम्मेदवार हिन्दू हितों का विरोधी है तो हिन्दू निर्वाचक उसका विरोध करें।

सन १९२१ में लालाजी स्वराज्य पार्टी में संमिलित हुवे थे और अपने मित्र रायजादा हंसराज के स्थान पर असेम्बली में जाकर पार्टी के डिप्टीलीडर बने लेकिन कुछ समय पश्चात स्वराजिस्ट पार्टी से विरोध होने के कारण उन्हों ने पार्टी से संबंध विच्छेद कर लिया। संबंध विच्छेद का कारण स्वराज्य पार्टी की Walk out policy पर मतभेद था। लालाजी हर एक प्रस्ताव पर Walk out को हानि कारक समझते थे। इसलिए उन्हें पार्टी से प्रथक हो जाना पड़ा। लेकिन प्रथक होकर भी उन्हों ने राष्ट्रीयता न छोड़ी। उन्होंने अपनी प्रथक पार्टी स्थापित की जिसका नाम " स्वतंत्र कांग्रेस दल " रखा गया। दूसरे निर्वाचन में इसी पार्टी की ओर से खड़े हुए और स्वराजिस्टों का विरोध होने पर भी वे दो स्थानों से निर्वाचित होकर आये। इसी प्रकार " स्वतंत्र कांग्रेस दल " की ओर से और भी कई उम्मेदवार सफल हुवे। इस दल का उद्देश्य यों तो कांग्रेस के ध्येयानुकूल ही था लेकिन यह दल Responsive Co-operation सहयोगासहयोग की नीतिका अनुसरण करता था।

गत दो वर्षों में लालाजीने असेम्बली में अपने दलका नेतृत्व गृहण किया। यद्यपि वे स्वराज्य पार्टी में नहीं थे लेकिन प्रजा हित में सदैव

स्वराजिस्टों का साथ दिया। यही नहीं गत १ वर्ष से तो असेंबली में प्रजापक्ष के लालाजी प्राण ही थ। व्यवस्थापिका सभा के गत देहली अधिवेशन में सायमन कमीशन के विरोध में लालाजीने ही प्रस्ताव रखा था और ऐसी पुरजोश वक्तृतादी थी कि सरकारी पक्ष कांप गया था। इसी प्रकार शिमलाधिवेशन में आपने "शांति रक्षा बिल" का विरोध करते हुए ऐसे गजब की वक्तृतादी थी कि लोग दंग रह गये। उन्होंने कहा था कि अंग्रेज हमें जो बोलशिवकों का और अफगानिस्तान का भय दिखाते हैं वह व्यर्थ है। अंग्रेजी कुशासन की अपेक्षा हम इन आपदाओं का सहन करना अच्छा समझते हैं।

अष्टम अध्याय।

जीवन के अंतिम दिवस।

अपने जीवन के अंतिम वर्ष में लालाजी देशके सरताज बन गये थे। यों तो जब से लालाजीने होश संभाला और राष्ट्रीय क्षेत्र में पदार्पण किया तभी से भारतीयों के हृदय मंदिर में स्वनाम धन्य लालाजी की मूर्ति विराजमान थी लेकिन गत ५—६ वर्षों में देश में सांप्रदायिकता का जोर होने से राष्ट्रीय क्षेत्र में आप विशेष भाग नहीं लेते थे किन्तु जब से भारतवर्ष में इंगलेंड के अंग्रेज कूटनीतिज्ञों द्वारा नियुक्त सायमन कमीशन ने प्रवेश किया तब से लालाजी ने पुनः देश का नेतृत्व ग्रहण किया और उनका शुभ नाम प्रत्येक भारतीय के मुंह पर रहने लगा।

स्वामी श्रद्धानन्दजी की मृत्यु के पश्चात् यद्यपि लालाजी हिन्दू संगठन और दलितोद्धार के कार्य को अग्रसर करने में व्यस्त थे लेकिन सायमन कमीशन की नियुक्ती ने आपको देशका नेतृत्व गृहण करनेके लिए विवश किया। आपने मद्रास कांग्रेस में हिन्दू मुस्लिम ऐक्य संबंधी प्रस्तावकी सफलताके लिए उद्योग किया। उद्योग ही नहीं अधिकांश में हिन्दुओं का विरोध होनेपर भी आपने हिन्दू महासभा में मद्रास के हिन्दू मुस्लिम ऐक्य प्रस्ताव को स्वीकृत करा दिया।

नेहरू शासन योजना

मद्रास कांग्रेसद्वारा नियोजित सर्वदल परिषद् द्वारा नियुक्त नेहरू कमेटी ने भारत के भावी शासन का जो मसविदा तैयार किया और जिसे लखनऊ सर्वदल सम्मेलन ने कतिपय संशोधन सहित स्वीकृत किया। लालाजी ने उस रिपोर्ट के कई अंशोंपर मतभेद रखते हुए भी देशमें ऐक्य स्थापन की सद्भावनासे समर्थन किया और समर्थन ही नहीं इसके लिए भरपूर आंदोलन किया। इसमें कोई शक नहीं कि लालजी के इस प्रकार प्रबल समर्थन से नेहरू रिपोर्ट का महत्व विशेष बढ़ गया। शोक है कि बीचही में आप चल बसे।

आगरा प्रान्तीय हिन्दू कांफ्रेंस इटावा

विगत अक्तूबर मासके अंतिम सप्ताहमें आगरा प्रान्तीय हिन्दू कांफ्रेंस–इटावा के अध्यक्ष पदसे लालाजी ने जो भाषण दिया वह भारतीय राजनैतिक क्षेत्र में विशिष्ट स्थान रखता है। हमें खेद है कि

भाषण में आपने भारतकी वर्तमान राष्ट्रीय प्रगति, हिन्दू मुस्लिम ऐक्य, नेहरू रिपोर्ट, अछूतोद्धार और हिन्दुओंकी सामाजिक उन्नति पर बड़े मान्य विचार प्रकट किये हैं। उक्त भाषण का अधिकांश भाग नेहरू रिपोर्ट के समर्थन में है। इसमें आपने नेहरू रिपोर्ट के विरोधी मुसलमानों की एक २ दलील का बड़े अच्छे ढंगसे खंडन करके यह सिद्ध किया है कि मुसलमानों की स्वत्व रक्षाके लिए इस रिपोर्ट से अच्छा और कोई मसविदा नहीं हो सकता। हिन्दुओं को तो आपने देशकी सुख शांति रक्षा के लिए इस रिपोर्ट को एक स्वर से स्वीकार करने की शिफारिश की है।

हिन्दुओंकी सामाजिक अवस्थापर विचार करते हुवे आपने कहा है कि "यदि हिन्दू सामाजिक दृष्टि से अपनी स्थिति सुधारलें तो फिर किसी जातिकी ओर से खतरा न रहेगा। आपने कहा कि ब्रिटिश सरकार और कुछ मुसलमान हिन्दुओं की वर्तमान वर्णव्यवस्था का दुरुपयोग करके उन्हें नाना प्रकार के फिरकों में सांप्रदायिक निर्वाचन का लोभ देकर बांट देना चाहते हैं।" वर्णव्यवस्था के विषय में आप कहते हैं कि "अपनी वर्तमान स्थितिमें वर्ण व्यवस्था हिन्दू धर्म के लिये धर्म की हैसियत से, और हिन्दू जातिके लिए जातिकी हैसियतसे, बड़ा भारी खतरा है। मैं वर्ण व्यवस्था के उद्भव और उसके गुणदोषों की आलोचना नहीं करूंगा। उस समय इस देशमें केवल हिन्दूही रहते थे। अतःवह उस समय उपयोगी रही होगी पर आधुनिक कालमें, और आज कल, यह सबसे बड़ी असामयिक भूल है। यह संघटनके रास्ते में बड़ी भारी रुकावट है। इस में संगठित हिन्दू जीवन के अणु

निहित है।" इसी सिलसिले में आपने वर्तमान वर्ण व्यवस्थाके हानि-लाभ बताते हुए जातिपांतिके भेदभावों को शीघ्र से शीघ्र नष्ट करने की आवश्यकता पर जोर दिया है। वर्णव्यवस्था के पश्चात आपने शारीरिक बल वृद्धि, शुद्धि, अछूतोद्धार और विधवा विवाह प्रचार पर विस्तार रूपसे अपने विचार प्रकट किये हैं। आपका यह भाषण आपके अंतिम विचारों का पूर्ण परिचय देता है।

कायरतापूर्ण आक्रमण

गत ३० अक्तूबर को सायमन कमीशन लाहौर पहुंचने वाला था। जनता इस "मान न मान मैं तेरा मेहमान" वाले कमीशन के विरोध में काले झंडों का जुलूस निकाल कर कमीशन के प्रति अपना विरोध प्रकट करना चाहती थी। उधर कमीशन को बहिष्कार प्रदर्शन से बचाने के लिए पुलिस भी पूरी तैयारी में थी। शहर में १४४ की घोषणा हो चुकी थी मगर जनता जुलूस निकालने और सभा करने पर तुली हुई थी। हमारे पूज्य नेता लालाजी भी इटावा हिन्दू कांग्रेससे उसी दिन लाहौर पहुंचे थे और १४४ की घोषणा सुनकर आपने भी जुलूस में सम्मिलित होनेका विचार कर लिया। दोपहर में जुलूस निकला। लालाजी अन्य सहयोगियों के साथ जुलूस के आगे २ थे। स्टेशन के निकट जुलूस ठहर गया और कमीशन की गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगा। जुलूस शांति पूर्वक सायमन वापस जाओ और वन्दे मातरम् की शब्दध्वनि कर रहा था। स्टेशन के चहुं ओर बाड़ा बंधा था। जिसे पुलिस घेरे खड़ी थी। पुलिस तो उपद्रव करने के लिए हमेशा मौका ढूंढा करती है मगर लाहौर में तो बिना कोई मौका पाये हुए

ही शांत जुलूस पर लाठियां चलानी शुरू की । हमारे शेरेनर की पीठ पर और छाती में कई लाठियों की चोट लगी । मारने वाला एक उद्दण्ड गोरा था, जो पीछे पता लगानेपर सीनियर पुलिस सुपरिण्टेण्डेंट निकला । एक लाठी लालाजी के छातेपर पड़ी जिससे छता टूट गया। लालाजी तथा दूसरे नेता डा. आलम, रायजादा हंसराज, डा. सत्यपाल प्रभृति शांत खड़े रहे । उन्हों ने जुलूस को शांत बनाये रखा और जनताकी ओर से किसी प्रकार के फसाद का मौका न दिया। लालाजी पर पड़ने वाली कई लाठियों को रायजादा हंसराज ने अपने ऊपर लिया । लालाजी ने उस उद्दण्ड गोरे से पूछा कि "अगर तुम मर्द हो तो अपना नाम बतादो ।" मगर उस कायर में इतना साहस कहां था जो अपना नाम बताता ।

उस दिन आपने मोची गेट लाहौर की सभामें उस दिन पुलिस के उद्दण्ड व्यवहार की निन्दा करते हुए जो उद्गार प्रकट किये वे आज भी हमारे भीतर गूंज रहे हैं और जब तक भारतवासी अपने महारथी नेता के अपमान का बदला न चुकालेंगे तब तक वे शब्द हमें चैन न लेने देंगे । उनका उस दिन का भाषण क्या था—भविष्य-वाणी थी और भारत के नौजवानों के लिये एक पवित्र संदेश था। यह संदेश इस पुस्तक के प्रारंभही में देदिया गया है ।

उस ३० अक्तूबर को आहत होकर लालाजी की शारीरिक अवस्था दिन पर दिन गिरतीही गई । लाठी की चोट से आपकी छाती में घाव होगया था और सूजन आगई थी । इस घटना से एक तो आप योंही उद्विग्न थे; दूसरे जख्म और सजनने आपको और भी

निर्बल कर दिया था। आहत होने के पश्चात आप देहली में आल इंडिया कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी समिति में शामिल होने के लिए गये लेकिन आप की हालत वही थी। देहली में उस समय आपने अपने ऊपर आक्रमण होने के विषय में प्रेसको यह वक्तव्य दिया था कि—"लाहौर में पुलिस के आक्रमण से मुझे जो चोटें आई वे बहुत गहरी नहीं थीं पर मैं समझता हूं पीछे से उनका परिणाम ऐसा हुआ कि मेरे संपूर्ण शरीर यंत्रको बड़ा भारी धक्का लगा और उससे मेरा स्वास्थ बिगड़ रहा है।" इस वक्तव्य से यह भली भांति सिद्ध होता है कि ३० अक्तूबर की चोट ही उनकी जान लेवा बनी।

नवम अध्याय

महारथी का बलिदान

उस कमबख्त ३० अक्तूबर की चोट ने आखिर भारतके भीष्म, रणबांकुरे महारथीको हम भारतीयों से सदैव के लिए पृथक कर दिया। १७ नवंबर १९२८ को प्रातःकाल ७ बजे आपका स्वर्गवास हुआ। ६३ वर्ष तक भारत माताकी अमूल्य सेवा कर १७ नवंबर को यह महापुरुष माताके चरणों में अपना तुच्छ शरीर भी अर्पण कर गया। स्वनाम धन्य लालाजी आज हमारे बीच में नहीं हैं, उनका नश्वर शरीर आज हमारी दृष्टि से परे हैं लेकिन लालाजी का पवित्र नाम, उनकी उज्वल कीर्ति और उनकी अंतिम देशवाणी आज भी हमारे हृदय में विराजमान है।

गत १६ नवम्बर १९२८ को आप मोटर में हवा खाने गये थे और "सर्वेण्ट आफ दी पीपल सोसायटी" की नई बननेवाली इमारत का आपने निरीक्षण किया था। उसके बाद घर आये और डाक्टर धर्मवीर से अपनी स्वास्थ परीक्षा कराई। डाक्टर ने कहा कि कोई खास रोग नहीं है, सिर्फ कमजोरी है। लालाजी ने कहा मेरी कमर और छाती में दर्द है और बुखार भी प्रतीत होता है। मगर उनकी नाड़ी की गति अथवा शरीर की गर्मी से बुखार नहीं मालूम पड़ता था, हां श्वास की गति कुछ तीव्र अवश्य थी। डाक्टर धर्मवीर ऐसी चिन्ताजनक अवस्था न समझकर रात को ११ बजे उन्हें छोड़कर चले आये। लालजी के पौत्र श्री भारतभूषण लालाजी की सेवा सुश्रुषा के लिए रह गये। १॥ बजे लालाजी को महसूस हुआ कि दर्द उन्हें सोने न देगा और उन्होंने अपने पौत्र भारतभूषण से कहा कि तुम सो जाओ। लालाजी ने रात बड़ी बेचैनीसे काटी। वे ६॥ बजे फिर बैठे होगये और बोले की दर्द असह्य हो गया है। वे लेट गये। उनकी स्वास गति तीव्र देखकर भारतभूषण अपने पिताको बुलाने गये (जो कि दूसरे कमरे में थे) लेकिन जैसे ही दोनों आये लालाजी की हृदय गति रुक चुकी थी।

प्रेस प्रतिनिधि के पूछने पर लालाजीके पुत्र पौत्र तथा दोनों डाक्टरों ने बताया कि "सायमन कमीशन के आगमन पर लालाजी पर जो मार पडी तबसेही लालाजी बहुत कमजोर हो गये थे और थकावटकी अकसर शिकायत किया करते थे। उन के हृदय में कोई पुराना रोग नहीं था। लालाजी इधर कभी बड़ी दुर्बलता अनुभव करते

थे।" लालाजी की मृत्युसे सारे देश में हाहाकार मच गया। बातकी बात में सारा लाहौर शहर बंद होगया। हजारों की संख्या में लोग लालाजी के दर्शन करने आने लगे। सारे पंजाब में एक दो घंटों में यह खबर फैलगई। मुलतान, अमृतसर, रावलपिंडी और देहलीसे इष्ट मित्रों तथा जनता के तार पर तार आये कि लालाजीका अंत्येष्टि संस्कार एक दिनके लिए मुल्तवी किया जाय ताकि सब लोग अंतिम बार अपने सेनापति का दर्शन कर सकें। मगर सुविधा न होने के कारण उसी दिन शाम को रावी नदी के किनारे लालाजी का अग्नि संस्कार किया गया।

रथीका जुलूस

लालाजी का शव उनके कमरे में जनता के दर्शनार्थ रखा था। सहस्रों की संख्या में लाहोर के नर नारियों ने लालाजीके पार्थिव शरीर के अंतिम दर्शन किये। एक बजे रथी का जुलूस निकला। लाहोर के इतिहास में इतना बडा जुलूस आज तक नहीं देखा गया। रथी के साथ एक लाख जन समूह था। रथीके आगे हजारों की संख्यामें कालिजों के विद्यार्थी थे फिर पीछे २ लालाजी के सहयोगी, इष्टमित्र, कौटुम्बीजन तथा हर एक जाति और सम्प्रदाय के लोग थे। जुलूस 'अनारकली, लाहोरी गेट, पापड़ मंडी, शाहालमी बजार और हीरा मंडी होकर गुजरा। मकानों की छतों पर लाहोर के नरनारी तथा आबाल वृद्ध लदे पडे थे। रथीके ऊपर पुष्पों की तथा गुलाब जलकी प्रत्येक छत से वर्षा हो रही थी और सड़कें वन्दे मातरम् और लालाजी की जय घोषों से गुंजारित हो रही थीं। भीड इतनी जम-

रदस्त थी कि कई आदमी बड़ी मुश्किल से कुचले जाने से बचाये जा सके। ५ बजे रावी के किनारे लालाजी के शवका अन्त्येष्टि संस्कार हुआ।

एक फ़क़ीर गिरफतार

लालाजी की रथी का जुलूस जैसे स्मशान घाट पर पहुंचा कि यह खबर जोरों से उड़ गई कि एक स्वयंसेवक ने एक यूरोपियन को फ़कीर की पोशाक़ में मय बोम्ब और रिवाल्वर सहित गिरफतार किया है। इससे बड़ी खलबली और सनसनी फैली। जुलूस का एक भाग तितर बितर हो गया। कुछ लोग घटनास्थल पर पहुंचे। उन्होंने देखा कि पुलिस ने एक आदमी को गिरफतार किया है। जांच करने पर विदित हुआ कि अफवाह झूठी थी। फकीरके पास न कोई बोम्ब था न रिवोलवर ही।

दशम अध्याय

देशभर में हाहाकार मचगया

जिस २ शहर में जैसे २ लालाजी की मृत्यु का समाचार मिलता गया वेसे २ ही शोक छाता गया—सब कारबार बन्द हो गये। लाहोर में स्कूल, कालिज, कचहरी हाईकोर्ट और सरकारी आफिस बंद रहे। लालाजी के प्रति सन्मान प्रदर्शनार्थ लाहोर के गवर्नमेन्ट कालिज का "यूनियन जैक" (सरकारी झंडा) आधा झुका दिया

गया था। सारे पंजाब में उसदिन हड़ताल हुई, जुलूस निकले और शोक सभाएं की गईं। बंबई में भी यह दुखद समाचार जैसे ही पहुंचा कि सब कारबार बंद कर दिया गया। शाम को सभाएं हुई और आज तक हो रहीं है। इसी प्रकार कलकत्ता, मद्रास, अहमदाबाद, इलाहाबाद बनारस, देहली, मेरठ, आगरा पूना आदि भारतवर्ष के प्रायः सब ही स्थानों में लालाजी की पवित्र स्मृति में शोक सभाएं मनाई गई।

डाक्टरों का अभिमत

डॉक्टर धर्मवीर तथा डॉक्टर गोपीचन्द ने, जो समय समयपर लाला लाजपतरायकी चिकित्सा किया करते थे, लालाजीके स्वास्थ्यका इतिहास बताते हुए एक वक्तव्य प्रकाशित कराया है जिसमें उन्होंने यह भी बताया है कि, उनके विचार में, लालाजीकी मृत्युका कारण क्या हुआ।

डॉक्टर धर्म वीरका, जिन्होंने २७ वर्ष इंगलैंडमें डॉक्टरी की है और करीब २० वर्ष तक इंगलैंडके एक नगरके हेल्थ अफसर रहे हैं, कहना है कि लालाजीको मुख्यतः नींद न आनेकी शिकायत थी। उन्हें चिन्ता तथा मानसिक परिश्रमके कारण नींद न आती थी। १९२२-२३ में जब लालाजी कैद थे तब मैंने दो बार उनकी परीक्षा की और देखा कि वे सविराम ज्वरसे पीड़ित हैं, जो कुछ महीनों तक रहा। १९२४ में जब लालाजी इंगलैंड आये तब उन्हें फ्स्यूरिसीकी बीमारी लग गयी थी। उन्होंने स्विटजरलैंडमें इसकी चिकित्सा करायी। भारत लौटनेपर १९२९ में कुछ दिनों तक समय

समयपर उनके पेड़ूमें दर्द हुआ करताथा। पर कुछ दिनों बाद र
शिकायत दूर हो गयी।

१९२७ में लण्डनमें एक प्रसिद्ध रेडियो विज्ञानवेत्ताने आप
स्वास्थ्यकी परीक्षा की। उन्होंने लालाजीके छातीके दाहिने भाग
कीटाणुके चिन्ह देखे पर उनसे किसी प्रकारकी हानि नहीं हो र
थी। उनका पेट तथा आतें ठीक तरहसे काम कर रही थीं।

१९२७ के जुलाई तथा अगस्त मासमें लालाजी फ्रांसके विच
स्थानमें ६ सप्ताह तक रहे जिससे उनका स्वास्थ्य सुधर गया
तिसपर भी नींद न आनेकी शिकायत मौजूद ही रही। इस प्रक
उस दिन तक, जब लालाजीपर आक्रमण हुआ, आपका स्वास्थ्य प्राय
बिलकुल ठीक था।

लालाजी अपमानसे बहुत उत्तेजित हो जाते थे। ऐसे मौकोंप
यद्यपि वे देखनेमें शांत रह जाते तो भी उनके स्नायु मंडलपर इसव
बड़ा प्रभाव पड़ता था। साधारणतः जो क्रांति विश्राम, मालिश स्वच्
वायुसेवनसे दूर हो जाया करती थी वह गत ३० अक्तूबरक
घटनाके बाद बराबर बढ़ती ही गयी और अंतमें प्राणघातक सिद्ध हुई

डाक्टर गोपीचन्दका कहना है कि ३० अक्तूबरके प्रहार
लालाजीकी तत्क्षण मृत्यु नहीं हुई यही बड़े आश्चर्यकी बात है
आपको उस दिन बड़ी गहरी चोट लगी थी। उस घटनाके बाद
लालाजी दिन-ब-दिन पीले पड़ते जाते थे और अन्त में उनकी मृत्यु
हो गयी।

डाक्टर गोपीचन्दका मत है कि लालाजीको उस दिन वह चोट न

लगी होती तो वे अभी कई वर्ष जीवित रहते। वह चोट ही उनकी हृदयगति मंद होनेका प्रत्यक्ष कारण थी।

शोक सन्तप्त भारतवासी

—मैं इस हानि को हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा दुर्भाग्य समझता हूँ। उनकी स्थानपूर्ति असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। उन जितनी सार्वजनिक सेवायें करने का शायद ही किसी जीवित नेता को सौभाग्य प्राप्त हुआ हो। स्वराज्य प्राप्ति ही उनकी सबसे बड़ी यादगार है।
—महात्मा गांधी।

देश का दुर्भाग्य है, कि वह एक महान् नेता के नेतृत्व से वंचित होगया। लालजी बिल्कुल निःस्वार्थ देशसेवक थे। उनकी पवित्र देशभक्ति, स्वातन्त्र्यप्रियता, निर्भयता और सचाई आदि गुणों ने उन्हें देशवासियों के हृदय में बिठा दिया था। उनकी सेवायें बहुत ही विशाल और व्यापक थीं। —माननीय मालवीयाजी महाराज।

—उनकी आकस्मिक मृत्यु से राष्ट्र पर आपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा है, और इसमें प्रत्येक देशभक्त की वैयक्तिक हानि हुई है।
—कवीन्द्र रवीन्द्र।

—ऐसा कोई व्यक्ति न होगा, जो लाला लाजपतराय की उच्चतम देशभक्ति, स्वातन्त्र्यप्रियता और महान् चरित्र की प्रशंसा न करे।

—सर तेजबहादुर सप्रू।

—लालाजी ने सब कुछ देश पर निछावर कर दिया।

सी० वाई० चिन्तामणि।

—लालाजी का अभाव राष्ट्रीय उन्नति के लिये बड़ी भारी क्षति है। समाजिक क्षेत्र में भी लालाजी की सेवायें अद्वितीय थीं।

—श्रीनिवास आयङ्गर।

—मुल्क के इस भारी नुकसान पर मुझे सख्त सदमा हुआ है। मै लालाजी के परिवार के प्रति समवेदना प्रकट करता हूँ।

—महाराजा कासिम बाजार।

मैंने लालाजी के चरणों में देशभक्ति का पाठ पढा है। लालाजी के स्वर्गवास से मेरा सच्चा संरक्षक जाता रहा। लालाजी की मृत्यु हम सबके लिये हृदय विदीर्ण करने वाली घटना है।

—भाई परमानन्द।

—लालाजी की मृत्यु अत्यन्त शोक का कारण है। पजाब का सर्वश्रेष्ठ नेता उठ गया। —डा० गोकुलचन्द नारङ्ग।

—लालाजी की मृत्यु क्या हुई है, अनभ्र वज्र–पात हुआ है। हिन्दू महासभा उनके बिना अनाथ होगई। लेकिन लालाजी की कृतियें न सिर्फ हिन्दुओं को बल्कि हिदुस्तानी राष्ट्र को ससार की महान जातियों की कोटि को पहुंचायगी।

—डा० बालकृष्ण शि० मुंजे।

—भारतमाता की खातिर लालाजी सिपाही की मौत मरे। हमें उनका अनुसरण करना चाहिये। साइमन कमीशन लालाजी की मौत का जिम्मेदार है। —बैरिस्टर अभ्यंकर।

—लाला लाजपतराय का नाम, उनकी अन्य अनेक सेवाओं के अतिरिक्त, इसलिये और भी जिन्दा रहेगा कि, वे सर्वसाधारण का दुःख दूर करने में सदैव तत्पर रहते थे। आशा है, उनके उत्तराधिकारी उनके प्रस्तावित क्षय-चिकित्सालय की स्थापना कर उनके उद्देश की पूर्ति करेंगे। —मलिक फीरोजखाँ नून।

(पंजाब सरकार के मिनिस्टर)

—लालाजी की मृत्यु का समाचार सुनकर अत्यन्त शोक हुआ। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति दें। मैं परिवार के प्रति समवेदना प्रकट करता हूं। —महाराजा साहब भरतपुर।

—लालाजी की मृत्यु एक राष्ट्रीय आपत्ति है। आपकी निर्भिकता आदर्श थी। —देवीप्रसाद खेतान।

—प्रत्येक वीर पुरुष की इच्छा होती है कि, उसे अभूतपूर्व मृत्यु प्राप्त हो। स्वातन्त्र्य-युद्ध में लालाजी ने नौकरशाही से लोहा लिया, और रणक्षेत्र में काम आये। यह असंदिग्ध है कि, पुलीस की लाठियों से लालाजी की मृत्यु इतनी जल्द हुई।

—डाक्टर पट्टाभि सीतारामय्या।

—लालाजी की आकस्मिक मृत्यु से मैं अवाक् रह गया। मैं नहीं समझता था कि, उनका अन्त इतना निकट है। लालाजी अद्वितीय देशभक्त थे—उन्होंने देश के लिये महान् त्याग किया है।

मुझे गर्व है कि, पिछले कई वर्षों से ऐसेम्बली और उसके बाह
मैं उनका अनुयायी था। —सेठ घनश्यामदास बिड़ला।

—लालाजी के शव को स्मशान ले जाते समय ही हमें साम्र
ज्यवाद को नष्ट कर देने की तजवीज को सोच लेना चाहिये, जो वि
लालाजी की मृत्यु का जिम्मेदार है। —श्रीयुत रूईकर।

—लालाजी की मृत्यु से मेरी वय्यक्तिक क्षति हुई है। मुझे
इतना दुःख है कि, मैं नहीं कह सकता कि, देश की कितनी क्षति
हुई है। लालाजी की आकस्मिक मृत्यु को देश का दुर्भाग्य ही
कहना चाहिये, क्योंकि लालाजी के देश-सम्बन्धी अभी कई मन
सूबे थे। —के० सन्तानम्।

—लालाजी की मृत्यु ने पंजाब को विधवा बना दिया है। वे
समाज सुधरकों के उत्कृष्ट नेता थे। —सर हरिसिंह गौड़

—लालाजी की कुर्बानी और निःस्वार्थता का दूसरा उदाहरण
मिलना कठिन है —सर सी० पी० रामस्वामी अय्यर

—लालाजी की आकस्मिक मृत्यु के समाचार को सुनकर मैं काँप
गया। लालाजी भारतीय स्वातंत्र्य युद्ध के शूरमाओं में से थे
उनका नाम पंजाबकेसरी बिलकुल ठीक था। वह प्रसिद्ध सामाजिक
और धार्मिक सुधारक थे। उन्होंने डी० ए०-वी० कालिज की
स्थापना में मुख्य भाग लिया और सर्वसाधारण की भलाई में सब
कुछ उत्सर्ग कर दिया। वे गुणों के भण्डार थे। इस क्षति की पूर्ती
नहीं हो सकती।

—नारायण स्वामी।

—महात्मा हंसराजजी से जब दरियाफ्त किया गया कि, आप लालाजी की मृत्यु को कैसा अनुभव करते है, तो हठात् उनके आँसू निकल पड़े। उन्होंने कहा कि, गजब हो गया है। यह ऐसी क्षति नहीं है, जिसकी पूर्ति हो सके। लालाजी-जैसे बहुत कम पुरुष संसार में जन्म लेते है जो दूसरों के लिये जीवनोत्सर्ग करते हैं। अपनी और लालाजी की आयु की समता करते हुए कहा कि, लालाजी मुझ से ८ मास छोटे थे। उनकी मृत्यु से जाति और देश की महान क्षति हुई है।

—राजा नरेन्द्रनाथ ने लालाजी के पुत्र को तार दिया है कि—लालाजी की मृत्यु से मुझे हार्दिक दुःख हुआ है। देश के लिये लालाजी का बलिदान सर्वोत्कृष्ट रहा है। इस क्षति की पूर्ति नहीं हो सकती। मैं आपके और आपकी पूजनीया माताजी के प्रति अपनी गहरी सहानुभूति प्रदर्शित करता हूँ।

—यूरोप से वापस आते हुए बंगाली नेता श्री० तुलसीचरण गोस्वामी ने कैसरेहिन्द जहाज से तार दिया है कि, लालाजी की मृत्यु का समाचार सुन कर घोर दुःख हुआ। मैं अपनी समवेदना प्रकट

—लाला लाजपतराय, भारत के वर्तमान नेताओं में ऊँचा दरजा रखते थे। वे शिक्षा के जबरदस्त प्रचारक थे। —मिस्टर गजनवी।

—वे तीन मिनट मेरी जिन्दगी के बहुमूल्य थे, जो मैंने लालाजी की अर्थी उठाने में व्यय किये। —अब्दुलमजीद।

—मुझे इस्लाम और देश की सेवा करने की प्रेरणा इंग्लैंड में लालाजी के ही सत्संग से हुई थी। —डाक्टर सुहरावर्दी।

—मुल्क का एक बुजुर्ग और व्यावहारिक राजनीतिज्ञ हम से जुदा हो गया। अत्यन्त शोक का विषय है कि, ऐसे आड़े वक्त में आपकी मौत हुई। मुझे दृढ़ विश्वास है कि, हमारी भविष्य सन्तान उनका अनुसरण करेगी। —डा० सर मुहम्मद इकबाल।

—मेरे दोस्त लाला लाजपतराय की आकस्मिक मृत्यु से मातृभूमि का एक महान सपूत जाता रहा। देश के लिये आम तौर से और हिन्दुओं के लिये खास तौर से यह ऐसी क्षति है, जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती। भारत के राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में आप जो स्थान रखते थे, वह आगामी सुदीर्घ काल में भी कठिनता से पूरा होगा। लालाजी जैसा जोशपूर्ण कौमी नेता हमसे जुदा होगया। परमात्मा आपकी आत्मा को शान्ति दे। —सर मुहम्मद शफी।

—उनकी मौत से मुल्क अपने एक सुपूत और एक अनन्य सेवक से महरूम होगया। वे मेरे बड़े मित्र थे।

—सर अब्दुल कादिर।

—लाला लाजपतराय की मृत्यु का समाचार सुनकर मुझे घोर दुःख हुआ। भारत की राजनीति में उनका विशेष हाथ था। मुझे

उनसे स्वयं मिलने का कभी अवसर तो नहीं प्राप्त हुआ, लेकिन वे कांग्रेस में शामिल थे, और महासभावादी विचार रखते थे। भारतीय मुसलमानों से उनका विचार–वैषम्य हो जाता था, लेकिन अब उनके विचारों में काफी परिवर्तन होगया था। ——सर अब्दुर्रहीम।

——लालाजी पहले शख्स थे, जिन्होंने देशनिकाले में माण्डले जाकर कुर्बानी की वह राह दिखाई, जिससे आजादी हासिल हो सकती है। यह नुकसान हिन्दू मुसलमान, ईसाई सबका है। दरअसल यह तमाम कौम का नुकसान है।

——मौलाना शौकतअली।

——यद्यपि राजनीति में लालाजी से चन्द बातों में मेरा मतभेद था, लेकिन उनकी मौत की खबर सुन कर मै थर्रा उठा। हिन्दुस्थान के महापुरुषों में से वे एक थे। उनकी विद्वत्ता और भारतीय इतिहास की उनकी रुचि की मैं कद्र करता हूँ। वे इंगलैण्ड के मजदूर दल पर अच्छा असर रखते थे। कर्नल वेजवुड उनसे सलाहें लिया करते थे। अफसोस है कि, ऐसे तवारीखी मौके पर मुल्क उनसे महरूम होगया। ——डाक्टर शफआत अहमद खाँ।

वे भी मातम करते हैं।

भारत के वायसराय लार्ड इरविन ने रंगून से लालाजी के पुत्र के नाम शोक–समवेदना–सूचक तार भेजा था।

भारत–सरकार के स्वराष्ट्र सदस्य मिस्टर क्रेरार ने भी लालाजी के परिवार के पास ऐसा तार दिया था।

साइमन सभा के पंच सर जान साइमन ने अपनी टोली की तरफ

से तार दिया था कि, हम लोगों को इसका दुःख है। लालाजी की मौत से एक समाज-सुधारक और एक राजनीतिज्ञ जाता रहा।

भारत-स्थित जापानी राजदूत ने भी लालाजी की मृत्यु-घटना पर देश के प्रति सहानुभूति प्रकट की है।

—लाला लाजपतराय की मौत से मुझे दुःख हुआ। राष्ट्रीय दल का एक दिलेर शेर उठगया, और ऐसेम्बली ने एक महान् व्यक्ति को खो दिया। —कर्नल क्राफर्ड, एम्० एल० ए०।

विदेशों से आर्त्तनाद।

पेरिस की इण्डियन सोशल एण्ड कमर्शल ऐसोसियेशन ने तार भेजा है—यह संस्था लालाजी के मातम में आपके साथ शरीक है, और भारत की इस क्षति पर आपके साथ सहानुभूति दिखाती है।

मिसर की राजधानी काहिरा में रहने वाले सिन्धी भारतीयों ने अपनी एक सभा करके शोक-समवेदना का सन्देश भारत को भेजा है

कांग्रेस के लन्दनी अखबार 'इण्डिया' के सम्पादक ने तार भेज है—लन्दन की इण्डियन नेशनल कांग्रेस लीग लाला लाजपतराय की मृत्यु पर शोक प्रकाशित करती है।

मारीशस की हिन्दू सभा ने भारतीय हिन्दू महासभा के नाम यह तार भेजा है—इस आकस्मिक मृत्यु से हम लोगों के दिल दहल उठे हैं। देश की भीषण क्षति में हम भी सम्मिलित हैं अपने महान् नेता के परिवार के साथ हमारी हार्दिक सहानुभूति है

जँजीबार की इण्डियन नैशनल ऐसोसियेशन और आर्य्यसमाज ने भी शोक समवेदना के सन्देश भेजे है।

—लाला लाजपतराय मेरे बहुत पुराने दोस्त थे। मुझे उनकी मृत्यु से सख्त सदमा हुआ है। लालाजी दुरङ्गी से सर्वथा अलग थे। उनकी मृत्यु से भारत की भारी हानि हुई है।

—मि० मेकडानेल्ड।

—संसार का एक महान् आत्मा चल दिया। लालाजी की मृत्यु से मुझे अपनी आत्मिक क्षति अनुभव होती है। भारतीय इतिहास के ऐसे नाजुक वक्त में लालाजी की मृत्यु से महान् क्षति हुई है।

—कर्नल वेजवुड।

लाला जी की साहित्य-सेवा

लाला लाजपतराय जीवन भर देश-सेवा के कार्य में लगे रहे। और वह सेवा भी किसी एक क्षेत्र में नहीं थी। फिर भी आप साहित्य सेवा के लिए समय निकाल लेते थे। आप ने उर्दू में 'वंदे मातरम्' नाम का दैनिक पत्र निकाला और बहुत समय तक उस का सम्पादन भी किया। अपने अंगरेजी साप्ताहिक पत्र 'पीपिल' का भी आप ने बहुत समय तक सम्पादन किया। अब कुछ समय से आप उस के सम्पादक नहीं रहे थे, परन्तु फिर भी उस के लिए नियमित रूप से लिखते रहते थे। आप की मृत्यु से दो ही दिन पहले 'पीपिल' का जो अंक निकला था उस में भी आप का एक लेख है।

पत्र-संपादन के सिवाय आप ने ग्रंथ-रचना भी की। आप की अंतिम पुस्तक 'अनहैपी इंडिया' थी, जिस का हिन्दी अनुवाद 'दुखी भारत' के नाम से इंडिअन प्रेस से अभी प्रकाशित हुआ है। इस पुस्तक का नमूना 'भारत' के पाठक भी देख चुके हैं। मिस

मेयो ने भारतवासियों के चरित्र पर जो झूठे लाञ्छन लगाये थे, उन का इस में खूब मुँह तोड़ जवाब दिया गया है । आप की एक और पुस्तक का नाम है संयुक्त राष्ट्र अमरीका । इस में आप ने संयुक्त राष्ट्र की उन्नति का वर्णन किया है, ताकि भारतवासी, उन्नति पथ पर बढ़ते हुए, उन्नतिशील अमरीका के दृष्टान्त से शिक्षा ग्रहण कर सकें ।

यह दूसरी पुस्तक आप ने अपने अमरीका-प्रवास के समय लिखी थी । उसी समय आप ने एक और भी पुस्तक लिखी थी जिस का नाम है 'यंग इंडिया'। इस पुस्तक का उद्देश्य था विदेशियों को भारत की राजनीतिक आकांक्षाओं का परिचय कराना और भारतवासियों के स्वराज के युद्ध में उनकी सहानुभूति प्राप्त करना । यह पुस्तक प्रकाशित होते ही भारत-सरकार ने जब्त कर ली थी, इसलिए इस का भारत में आना रुक गया था । परन्तु अब सरकार ने जब्ती का हुक्म रद्द कर दिया है । मांडले के कारावास से लौट कर अपने वहां के जीवन पर भी आपने एक पुस्तक लिखी थी ।

भारत के राजनीतिक आन्दोलन का तो 'यंग इंडिआ' में वर्णन हो चुका, सामाजिक आन्दोलन पर आप एक महत्व-पूर्ण पुस्तक पहले ही लिख चुके थे । इस पुस्तक का नाम है Arya Samaj Movement। इस में आर्य-समाज का इतिहास देने के सिवाय आप ने आर्य समाज सम्बन्धी कई गलतफहमियों को भी दूर किया है । आप की एक और महत्वपूर्ण पुस्तक का नाम है National Education (राष्ट्रीय शिक्षा) । इस पुस्तक में एक ओर जहां आप ने यह बतलाया है कि हमारी शिक्षा प्रणाली में किन किन सुधारों की जरूरत

है, वहां दूसरी ओर बहुत से भारतवासियों के राष्ट्रीय शिक्षा सम्बन्धी गलत विचारों की भी आपने निर्भीकता के साथ आलोचना की है।

ये सब पुस्तकें अंगरेजी की हैं। इन के सिवाय आप ने उर्दू में भी कई ग्रन्थों की रचना की है। इन में मुख्य पुस्तक 'तवारीखे हिन्द' है, जिस का हिन्दी अनुवाद भी 'भारतवर्ष का इतिहास' के नाम से प्रकाशित हो गया है। इस पुस्तक का उद्देश है प्राचीन भारत के महत्व को दिखलाना। किसी हद तक इसी उद्देश्य से और किसी हद तक वीर पूजा के भाव से आपने श्रीकृष्ण, अशोक और महाराज शिवाजी के जीवन-चरित्र भी लिखे हैं। इटली के देश-भक्त वीर मैजिनी और गैरीबाल्डी के जीवन-चरित्र भी आपने लिखे हैं। प्रसन्नता की बात है कि उन में से अधिकांश का हिन्दी अनुवाद भी हो गया है।

लालाजी की पुस्तकों का यहां उल्लेखमात्र ही किया गया है। परन्तु पुस्तकों की इस सूची मात्र ही से पाठकों को इस बात का अन्दाजा तो लग ही जायगा कि लालाजी की प्रतिभा कैसी सर्वतोमुखी थी। आप ने एक नहीं अनेक विषयों पर ग्रन्थ रचना की है और सभी विषयों में बड़ी विद्वत्ता का परिचय दिया है। (भारतसे)

लालाजी का स्मारक

लालाजी की मृत्युसे भारतवासियों को कितना कष्ट हुआ है इसका वर्णन करना इस लेखनी की शक्ति के बाहर की बात है। हिन्दू, मुसल्मान, सिख, जैन, पार्सी और यहां तक कि अंग्रेज भी लालाजी की मृत्युसे बड़े दुखी हुए हैं। लंदन अमरीका और अफ्रीका तथा

जापानादि के समाचारों से पता चलता है कि विदेशों में भी लालाजी की असामायिक मृत्युके लिए शोक मनाया गया। यहीं नहीं उन्होंने स्पष्ट रूपसे लालाजी की मृत्यु के लिए पंजाब की पुलिस को अपराधी ठहराया है और वास्तव में बात यथार्थ है। जनता की आंखों में अंगुली नहीं घुसेड़ी जा सकती। पंजाब कौंसिल के देशभक्त सदस्य और पंजाब के साहसी कार्यकर्ता डा. आलम ने तो स्पष्ट शब्दों में पंजाब सरकार को इसके लिए दोषी सिद्ध कर दिया है। यदि पंजाब सरकार दोषी नहीं थी और पुलिस की मारसे लालाजी की मृत्यु नहीं हुई तो पंजाब सरकार को जनता की संतुष्टि के लिए "गैरसरकारी सदस्यों द्वारा जांच" वाले डा० आलम के प्रस्ताव को स्वीकार करना चाहिये था। मगर सरकारने साफ इंकार कर दिया। भारत उपसचिव लार्ड विन्टरटन ने भी पार्लमेंट में लालाजी की मृत्युकी जांच करने के विषय में साफ इंकार कर दिया। देशका इतना बड़ा नेता मरजाय एवं सारी जनता एक स्वर से पुलिसको लालाजी को मारनेका अपराधी ठहरावे मगर फिर इस विषयमें कोई जांच न हो यह भारतीयों के साथ घोर अन्याय है। पराधीन जातियों पर इस प्रकार के अत्याचार हमेशा से होते चले आये हैं. लेकिन अब भारत इन अत्याचारों से ऊब गया है और अब वह दिन दूर नहीं है कि ये अत्याचार और देशकी पराधीनता एकही साथ नष्ट कर दिये जायंगे।

लाजपतराय दिवस

राष्ट्रीय महासभाके अध्यक्ष डा. अंसारी की आज्ञानुसार गत-

२९ नवंबर १९२८ को सारे भारतवर्ष में "लाजपतराय दिवस" मनाया गया। भारतवर्ष के कौने २ में उस दिन शोक मनाया गया, सभा की गई, देशकी स्वतंत्रता के लिए मर मिटनेवाले अपने पूज्य नेता का अनुसरण करने के लिए जनता से अपील की गई और उनके स्मारक के लिए धन एकत्र किया गया। २९ नवंबर को सारे भारतवर्ष में गम की घटा छाई हुई थी।

भारत के नवयुवक उत्तर दें

स्वर्गीय देशबंधु सी. आर. दासकी धर्मपत्नि श्रीमती बासन्ती देवीने लालाजी की मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए भारतके नौजवानों को ललकारा है और उनसे निम्न लिखित वक्तव्य द्वारा उत्तर मांगा है:–

"मैं यह सोच कर लज्जा और अपमान से कांप उठती हूं कि उन नरशंस और नीच हाथोंने उस वृद्ध मनुष्यके शरीरपर प्रहार करने की हिम्मत की जो देशके ३० करोड़ मनुष्यों का प्यारा था।

क्या देश में अबभी नवयुवक और मर्द बसते हैं। क्या वे इस घटना की ओर लज्जा और अपमान का अनुभव करते हैं। मैं इस देशकी स्त्री हूं, मैं इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर चाहती हूं। लालाजी की राख ठंडी होने के पूर्व भारत के मर्द और नवयुवक इसका उत्तर दें"।

देखें भारत के नौजवान किस प्रकार इस प्रश्न का उत्तर देते हैं।

लालाजी का स्मारक

महामना मालवीय जी डा. अंसारी और सेठ घनश्याम दासजी बिड़ला के नाम से भारतवासियों के नाम लालाजी के स्मारक के लिए ५ लाख की अपील प्रकाशित हुई है। अपील कर्ताओंने

बताया है कि लालाजी ने जिन २ कार्यों में अपनी शक्ति लगाई थी उनमें तथा उनकी स्थापित सर्वेण्ट आफ दी पीपुल सोसायटी में यह रुपया व्यय किया जावेगा । महात्माजी तथा देश के अन्य नेताओं ने इस अपीलका समर्थन किया है । लालाजीका स्मारक तो होना ही चाहिये और उनकी स्मृति स्वरूप उनके कार्यों को द्विगुणित उत्साह से चलाने के लिए ५ लाख क्या इससे भी अधिक रुपया एकत्र होना चाहिये लेकिन लालाजीका सच्चा स्मारक तो कुछ और ही है। और वह यह है कि भारतका प्रत्येक नवयुवक लालाजीकी भांति अपने समस्त जीवन को देशोद्धार के लिए अर्पण करदे। वास्तव में उस महानात्मा की भांति स्वजीवन स्वदेश सेवा में अर्पित करने के लिए जब नवयुवक दृढ़ प्रतिज्ञ होकर मैदान में उतर पड़ेंगे तभी लालाजीकी आत्मा को संतोष होगा और शाति मिलेगी।

लालाजी के जीवनकी प्रायः सबही घठनाओं पर हमने सक्षेप में प्रकाश डालदिया है। यहां पर हम कुछ विपेश लिखने की आवश्यकता नहीं समझते। स्वदेशी उद्योग धंधो के प्रोसाहन में लालाजी ने जो कार्य किया उसका पिछले पृष्टों कोई वर्णन नहीं किया जासका। लालाजी स्वदेशोन्नति के लिए स्वदेशी उद्योग धंधों के प्रचलन की भारी आवश्यकता समझते थे। "पंजाब नैशनल बैंक आफ इंडिया" उन्हीं के सदुद्योग का मधुर फल है। लालाजी इस बैंक के डायरेक्टर भी थे। वे और भी दूसरी कई स्वदेशी फर्मों के कार्य संचालन में भाग लेते थे।

एक और खास बात जो हम पीछे वर्णन न कर सके वह

यह है कि लालाजी भारतीय श्रमजवियों के बंधु थे। श्रमजीवियों के कष्टों को वे अपना कष्ट समझते थे। वे सन् १९२६ में भारतीय श्रमजीवियों के प्रतिनिधि बनकर आठवीं अंतर्राष्ट्रीय मजूर कांग्रेस में सम्मिलित होने के लिए जिनेवा गये थे और वहां उन्हों ने भारतीय श्रमजीवियों की समुन्नति के लिए प्रबल प्रयत्न किया था। इस विषय में लालाजी अपने साप्ताहिक पत्र "पीपुल" में एक बार यह लिखा था कि भारतीयों के अन्तर्राष्ट्रीय परिषदों में बहु संख्या में अपने प्रतिनिधि भेजने चाहियें। इस से वे संसार के समक्ष अपनी सुयोग्यता का परिचय देते हैं।

उपसंहार।

स्वनाम धन्य लालालाजपतराय का जीवन चरित्र संकलन करना एक महान उत्तर दायित्व अपने ऊपर लेना है। जिस महानात्मा ने सारा जीवन स्वदेश और स्वधर्म सेवा में अर्पण किया हो उसका जीवन चरित्र संकलन के लिए इस पुस्तिका के अल्प संख्यक पृष्ट पर्याप्त नहीं हैं। इस सुकार्य के लिए तो एक विशाल ग्रंथ की आवश्यकता है। हमें स्वयं अपने इस प्रयास पर संतोष नहीं है। स्वशक्ति अनुसार हम जो कुछ सेवा करसके हैं वह पाठकों के समक्ष उपस्थित है। ओ३म् शम्।

लालाजी की अमृतवाणी।

मेरा मज़हब हकपरस्ती (सत्यकी पूजा) है। मेरी मिल्लत (धर्म) क़ौम परस्ती है। मेरी इबादत (प्रार्थना) मुल्कपरस्ती (देश सेवा) है। मेरी अदालत मेरा अंतःकरण है। मेरी जायदाद मेरी कलम है। मेरा मंदिर मेरा दिल है। मेरी उमंगें सदा जवान हैं।

\+ \+ \+ \+

स्वतंत्रता का सुकुमार पौधा जिस पोषक पदार्थ पर पनपनाता है, वह पोषक द्रव्य शहीद का खून है। फांसी लगाने वाले की रस्सी या जल्लाद की कुल्हाड़ी या बन्दूकची की गोली केवल व्यक्तिगत जीवन को बुझा देती हैं, किन्तु इससे आगे यह एक काम और करती है, और वह यह कि वह सामुहिक जीवन की इच्छा को अधिक तीव्र और बलवती बना देती है। देश निष्कासन, कालापानी, कारावास दंड, यंत्रणाएं और जायदाद जप्ती ये सब जालिमों के रोजमर्रा के इस्तेमाल के हथियार हैं और इन हथियारों को वह स्वाधीनता का गला घोटने के लिए और स्वतंत्रता के इच्छुकों का नाश करने के लिए इस्तेमाल करता है। लेकिन अभी तक तो इतिहास में यह हथियार स्वतंत्रता को विनष्ट करने में कारगर होते नहीं दिखाई दिया है।

वह 'लाजपत' जिसे कहते थे सब हबीबे वतन

[लेखकः—श्री 'बिसमिल,' प्रयाग]

वह कौन फूल है जो आज इस चमन में नहीं,
बहार जैसे कि थी पहिले अब वतन में नहीं,
वह अंजुमन है मगर शमअ अंजुमन में नहीं,
वह आज कौन है जो रंज में मेहन में नहीं,
वह 'लाजपत' जिसे कहते थे सब हबीबे वतन,
उसी के सोग में क्या होगया नसीबे वतन।

वतन का तूही गिरे हाल में सहारा था,
वतन का तू ही चमकता हुआ सितारा था,
वतन के वास्ते सब कुछ तुझे गवारा था,
वतन की जान था अहले वतन का प्यारा था,
वतन का फूला-फला तुझको बाग़ कहते थे,
वतन का सब तुझे रोशन चिराग़ कहते थे।

तेरा अलम है अलम जिसको सह नहीं सकते,
जो दिल का हाल है, वह दिल से कह नहीं सकते,
जो तू नहीं है तो हम खुश भी रह नहीं सकते,
कहीं हवाएं मुखालिफ़ में बह नहीं सकते,
अब अपना गुंचए उम्मीद खिल नहीं सकता,
तेरा जवाब ज़माने में मिल नहीं सकता।

(अभ्युदय)